



04 - अनिश्चय के मंवर  
में युद्धविराम का  
मरिच



05 - समाजता आधारित  
सामाजिक परिवर्तन का  
दर्शन



06 - संकट मोचन के  
दरबार में अनूप जलोटा  
ने लगायी 27वीं हजिरी



07 - अमेरिका-ईरान में युद्ध  
विराम : ट्रंप हामद न  
होते तो क्या करते?

# कुरुक्षेत्र

subhasaverenews@gmail.com  
facebook.com/subhasaverenews  
www.subhasavere.news  
twitter.com/subhasaverenews

## शरद की सुबह

चुका भी हूँ मैं नहीं  
कहाँ किया मैंने प्रेम  
अभी ।  
जब करूँगा प्रेम  
पिघल उठेंगे  
युगों के भूधर  
उफन उठेंगे  
सात सागर ।  
किंतु मैं हूँ मौन आज  
कहाँ सजे मैंने साज  
अभी ।  
सरल से भी गूढ़, गूढ़तर  
तत्व निकलेंगे  
अमित विषमय  
जब मथंगा प्रेम सागर  
हृदय ।  
निकटतम सबकी  
अपर शौर्य्यों की  
तुम  
तब बनोगी एक  
गहन मायामय  
प्राप्त सुख  
  
तुम बनोगी  
तब  
प्राप्त जय !  
- शमशेर बहादुर सिंह

## प्रसंगवश

# ममता से मोदी तक, पश्चिम बंगाल चुनाव में कौन कितना ताकतवर

### रूपसा सेनगुप्ता

पश्चिम बंगाल में इस महीने होने वाले विधानसभा चुनाव किसी के लिए सत्ता में बने रहने की लड़ाई है तो किसी के लिए कुर्सी हथियाने की और किसी के लिए अपने अस्तित्व की रक्षा की। इस बात पर अनुमान लगाए जा रहे हैं कि इसमें कौन जीतेगा और कौन विपक्ष की भूमिका में रहेगा। राजनीति पर बहस करने वाले अक्रसर कहते हैं कि चुनावी गणित हमेशा सीधा नहीं होता।

इसकी वजह यह है कि चुनाव कभी मुद्दों पर होते हैं और कभी नतीजा उम्मीदवारों पर निर्भर होता है। इसमें कई बार एकदम अलग समीकरण काम करते हैं। पश्चिम बंगाल चुनाव के इस समीकरण में कई राजनेता अहम भूमिका निभा रहे हैं। इनमें से कोई चुनाव लड़ रहा है तो कोई दूसरों के समर्थन में प्रचार कर रहा है। कई लोग बंगाल के रहने वाले नहीं हैं-लेकिन ये लोग किसी न किसी तरीके से इस चुनाव के अहम किरदार के तौर पर उभरे हैं।

तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी अपने चुनाव अभियान के दौरान अक्रसर कहती हैं कि राज्य की सभी 294 सीटों पर वही उम्मीदवार हैं। उनकी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता भी उनकी एकमात्र और अद्वितीय नेता बताते हैं। राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ लेने के बाद बीते 15 साल से वह लगातार सत्ता में हैं। बीते कुछ साल के दौरान उनकी पार्टी के नेताओं और मंत्रियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के कई आरोप लगते रहे हैं। राज्य

में विभिन्न मुद्दों पर आम लोगों की नाराजगी भी सामने आती रही है।

महिला मुख्यमंत्री के तौर पर उनके कार्यकाल, जनसंपर्क और लड़ाकू नेता की छवि ने आम लोगों में उनकी अलग पहचान बनाई है। उनकी पार्टी भाजपा के खिलाफ लगातार मुखर रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि लक्ष्मी भंडार, कन्याश्री, स्वास्थ्य साथी और हाल में शुरू की गई युवा साथी जैसी योजनाएं इस महीने होने वाले चुनाव पर असर डाल सकती हैं। महिला और मुसलमान वोट इस चुनाव में भी निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

भाजपा प्रधानमंत्री के तौर पर मोदी की छवि को सामने रख कर चुनाव लड़ना चाहती है। यह एक बड़ा फैसला हो सकता है। दूसरी ओर, अमित शाह को भाजपा का मुख्य चुनावी रणनीतिकार माना जाता है। यह दोनों नेता अपनी जनसभा और चुनावी रैलियों में केंद्र सरकार की विकास योजनाओं का ब्योरा देने के साथ ही तृणमूल कांग्रेस पर केंद्रीय योजनाओं का लाभ राज्य के आम लोगों तक न पहुंचने देने के भी आरोप लगा रहे हैं। साथ ही सीमा पार से घुसपैठ, भ्रष्टाचार और चंदा उगाही के आरोपों पर तृणमूल कांग्रेस पर निशाना साधती रही है। इस चुनाव में भी पार्टी ने इसे ही अपना हथियार बनाया है।

तृणमूल कांग्रेस के पुराने नेताओं की भीड़ में अभिषेक बनर्जी एक ऐसा युवा चेहरा हैं जो पहले ही संसदीय राजनीति में कामयाबी हासिल कर चुके हैं। उन्होंने पार्टी की नींव मजबूत करने पर खास ध्यान दिया है। उनकी 'ब्वॉय नेक्स्ट डोर' वाली छवि ने

जनसंपर्क में मदद की है। कई लोग उनको भविष्य का नेता मानते हैं। विपक्ष ने अभिषेक के खिलाफ भ्रष्टाचार और आर्थिक गड़बड़ियों का आरोप लगाया है।

शुभेंदु अधिकारी ने वर्ष 2021 के विधानसभा चुनाव में नंदीग्राम सीट पर ममता बनर्जी को हराया था। बीते कुछ साल के दौरान विपक्ष के ताकतवर नेता के तौर पर भाजपा की ओर से वह सरकार के खिलाफ काफी मुखर रहे हैं। पूर्व मैदिनीपुर और आसपास के इलाकों में उनका खासा असर है। विपक्षी नेता उनके खिलाफ धार्मिक आधार पर ध्व्वीकरण के आरोप लगा रहे हैं।

हुमायूं कबीर को किसी दौर में कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी का करीबी माना जाता था। लेकिन कांग्रेस के बाद वह पहले भाजपा और फिर तृणमूल कांग्रेस में शामिल हुए थे। यानी वह कभी न कभी तीनों प्रमुख राजनीतिक दलों में रह चुके हैं। चुनाव से पहले उन्होंने 'आम जनता उन्नयन पार्टी' नाम के नए राजनीतिक दल का गठन किया है। इस चुनाव में उन्होंने असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के साथ सीटों पर समझौता किया था। हालांकि 10 अप्रैल को ओवैसी की पार्टी ने इस गठबंधन से बाहर निकलने का फैसला किया। कबीर की पार्टी कुल 182 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। इसमें नंदीग्राम और भवानीपुर सीटें भी शामिल हैं।

राजनीतिक विश्लेषक उज्वल राय नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी पर कहते हैं, 'ये दोनों जब भी किसी चुनाव में जाते हैं तो उसका महत्व बढ़ जाता है।

इस बार भाजपा एसआईआर के मुद्दे पर काफी उत्साहित है और वह इस बार चुनाव में कामयाबी हासिल करना चाहती है। ममता बनर्जी तृणमूल कांग्रेस की सबसे बड़ी ताकत हैं और उनकी छवि लड़ाकू नेता की है। यह याद रखना होगा कि ममता का सबसे बड़ा करिश्मा राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी नेता के तौर पर है। वह एसआईआर को राजनीतिक तौर पर इतना बड़ा मुद्दा बना रही हैं कि भाजपा को इस पर जवाब देना पड़ रहा है। दिलचस्प बात यह है कि एक सत्तारूढ़ पार्टी दूसरी सत्तारूढ़ पार्टी से सवाल कर रही है। एसआईआर का मुद्दा फिलहाल बाकी तमाम मुद्दों पर भारी पड़ रहा है।

राय की निगाह में हुमायूं कबीर बेहद दिलचस्प भूमिका में हैं। वह कहते हैं, 'तृणमूल कांग्रेस को मुसलमानों के ज्यादा वोट मिलते हैं। इसलिए हुमायूं कबीर अहम हो गए हैं। उन्होंने अपनी अलग पार्टी बनाई है। वह यह समझाने का प्रयास कर रहे हैं कि उनकी पार्टी ही मुसलमानों की एकमात्र हितैषी है और तृणमूल कांग्रेस अब तक महज वोट बैंक के तौर पर उनका इस्तेमाल करती रही है। वह बावरी मस्जिद की तर्ज पर मस्जिद भी बना रहे हैं।'

राय का कहना था, 'दिलचस्प बात यह है कि तृणमूल कांग्रेस उन पर मुस्लिम वोटों में सेंध लगा कर भाजपा को फायदा पहुंचाने के आरोप लगा रही है। लेकिन दूसरी ओर, भाजपा का कहना है कि वह दरअसल दूसरे तरीके से ममता बनर्जी की ही मदद कर रहे हैं। इससे खेल दिलचस्प हो गया है।'

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

# स्वदेशी मिसाइलों से लैस होंगे 114 राफेल विमान

## रक्षा मंत्रालय ने बनाया प्लान, खरीदो और बनाओ नीति तैयार



नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत जिन 114 राफेल लड़ाकू विमानों को खरीदने का प्लान बना रहा है, उनको लेकर यह सुनिश्चित किया जाएगा कि स्वदेशी रूप से विकसित मिसाइलों और हथियार प्रणालियों को इनमें एकीकृत किया जा सके। रिपोर्ट के मुताबिक, मामले की जानकारी रखने वालों ने बताया कि खरीदो और बनाओ सौदे के तहत होने वाली सरकार-से सरकार डील में तथाकथित इंटरफेस कंट्रोल डॉक्यूमेंट को अनिवार्य किया जाएगा। रक्षा मंत्रालय से उम्मीद है कि वह अगले महीने फ्रांसीसी जेट निर्माता कंपनी डसॉल्ट को रिक्वेस्ट फॉर प्रोपोजल जारी करेगा और उसके बाद अनुबंध पर बातचीत शुरू होगी। रक्षा अधिग्रहण परिषद ने 12 फरवरी को इस सौदे को मंजूरी दे दी थी।

## 96 फाइटर जेट भारत में ही बनाए जाएंगे

मामले के जानकार लोगों ने कहा कि योजना यह है कि 3.25 लाख करोड़ रुपये की इस मेगा डील के फाइंडिंग कॉन्ट्रैक्ट में आईसीडी को पक्का कर दिया जाए। आईसीडी एक बहुत ही जरूरी सिस्टम इंजीनियरिंग डॉक्यूमेंट है, जो किसी सिस्टम और उसके सब-सिस्टम के बीच के सभी अहम प्रोटोकॉल को कंट्रोल और डिफाइन करता है। डीएसी द्वारा मंजूर किए गए प्रस्ताव के मुताबिक, 18 फाइटर जेट फ्रांस से प्लाई-अवे कंडीशन में डिलीवर किए जाएंगे, जबकि बाकी 96 भारत में ही बनाए जाएंगे, जिनमें 25 से ज्यादा स्वदेशी सामग्री का इस्तेमाल होगा। इस तरह की रिपोर्टों के बीच कि इस मेगा डील में एक रुकावट आ गई है, क्योंकि फ्रांसीसी राफेल निर्माता डसॉल्ट ने भारत को लड़ाकू विमान का सोर्स कोड देने से इनकार कर दिया है। रक्षा मंत्रालय के शीर्ष अधिकारियों ने पुष्टि की है कि कोई भी देश ये मालिकाना सॉफ्टवेयर कोड (जो रडार, इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर सूट और हथियार एकीकरण को नियंत्रित करते हैं) किसी तीसरे देश को नहीं देता है और यह डील पूरी तरह से सही रास्ते पर है।



## भारत तेजस पर दे रहा ध्यान

भले ही भारत ने अमेरिका या रूस, किसी से भी पांचवीं पीढ़ी के विमान खरीदने का कोई फैसला नहीं लिया है, लेकिन वह भविष्य के लिए स्वदेशी रूप से तेजस मार्क एल ए के विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। इसके साथ ही, वह लंबी दूरी की मिसाइलों और दो इंजन वाले एल ए पर भी काम कर रहा है, ताकि विदेशी हवाई प्लेटफॉर्म, बायिंड विजुअल रेंज हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलों पर निर्भरता होगी।

# कठिन राह और हौसलों की साइकिल पर भारत यात्रा

● 5700 किमी की दूरी तय कर कोलकाता पहुंची आशा



कोलकाता (एजेंसी)। हजारों किलोमीटर की कठिन राह, बदलते मौसम, अनिश्चित चुनौतियां- लेकिन हौसले बुलंद हैं तो हर मजिल करीब लगती है। इसी जज्बे की जीती-जागती मिसाल बनकर उभरी हैं आशा मालवीय, जिन्होंने अपनी साइकिल यात्रा के जरिए नारी शक्ति, देशभक्ति और अदम्य साहस का ऐसा संदेश दिया है, जिसने युवाओं के दिलों में नई ऊर्जा भर दी है। 78वें भारतीय सेना दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय स्तर की एथलीट, पूर्वतारोही व साइकिलिस्ट आशा मालवीय ने 11 जनवरी 2026 को

राजस्थान के जयपुर से 7,800 किलोमीटर लंबी देशव्यापी पूर्व-पश्चिम एकल साइकिल अभियान (यात्रा) की शुरुआत की थीं। इस सफर में वह राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड को पार करते हुए करीब 5,700 किलोमीटर की दूरी तय कर कोलकाता पहुंचीं, जहां गुरुवार को एनसीसी कैडेटों व अधिकारियों ने उनका गर्वजोशी से स्वागत किया। 7,800 किलोमीटर में से अब तक वह 5,700 किमी की दूरी तय कर चुकी हैं, जबकि उनका अंतिम लक्ष्य चीन की सीमा तक है।

## मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने की कृषि लोकरंग आयोजन की तैयारियों की समीक्षा

# कृषि लोकरंग से किसानों के जीवन में आएगा उत्सव और सम्मान का नया रंग : मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि कृषि हमारी जीवन संस्कृति का मूल आधार है। किसान अन्नदाता होने के साथ हमारी संस्कृति, परम्पराओं और सुरक्षित भविष्य का आधार स्तम्भ हैं। किसान अपने परिवार के लिए ही नहीं, पूरे समाज के लिए अन्न का उत्पादन करता है। किसान मनुष्यों के साथ पशु-पक्षियों और कीट-पतंगों का भी उदर-पोषण करता है। ऐसे अन्नदाता के जीवन में आनंद और उत्सव का संचार करना हमारा दायित्व है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार यह वर्ष किसान कल्याण वर्ष के रूप में मना रही है। कृषि लोकरंग-2026 इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को मुख्यमंत्री निवास (समल भवन) में प्रदेश में कृषि लोकरंग - 2026 आयोजन की तैयारियों की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि यह आयोजन किसानों के जीवन, उनकी पुरा परम्पराओं और कृषि संस्कृति का जीवंत उत्सव बने। उन्होंने कहा कि जो दिन-रात अथक श्रम-साधना कर सबके उदर पोषण की चिंता करता है, उसके परिश्रम से भरे जीवन में खुशियों के सुनहरे रंग भरना हम सबका कर्तव्य है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषि लोकरंग में किसानों और आमजन की सहभागिता बढ़ाने के लिए कृषि विज्ञ प्रतियोगिता जैसे नवाचार किए जाएं। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार भी दिए जाएं। प्रत्येक जिले के प्रथम विजेता (टापर) को पुरस्कार के रूप में किसानों के लिए हर मौसम में उपयोगी कृषि संसाधन (जैसे ट्रैक्टर आदि) एवं अन्य तरह के पुरस्कार भी दिए जा सकते हैं।



## लोकरंग के दौरान राज्य, संभाग एवं जिलास्तर पर किए जाएं सांस्कृतिक कार्यक्रम

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह वर्ष हम किसान कल्याण वर्ष के रूप में मना रहे हैं। इसका उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना, उनके जीवन स्तर में सुधार लाना और कृषि को लाभकारी बनाने के साथ ही किसानों के जीवन में आनंद लाना भी है। इसीलिए हम सब मिलकर इस वर्ष को किसानों के आनंद के वर्ष के रूप में मनाएंगे, जिससे किसान सिर्फ आर्थिक रूप से नहीं, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी खुद को सम्मानित महसूस करें। इसके लिए लोकरंग के दौरान राज्य स्तरीय कार्यक्रम के अलावा संभाग एवं जिलास्तर पर सर्व लोकप्रिय सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्रदर्शनी सहित कवि सम्मेलन जैसे आयोजन भी किए जाएं। इन कार्यक्रमों में किसानों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों तक कृषि लोकरंग आयोजन की जानकारी प्रभावी रूप से पहुंचायी जाए। कृषि लोकरंग में स्थानीय उत्पादों, हस्तशिल्प और कृषि आधारित उद्योगों सहित उनके उत्पादों को भी प्रदर्शित किया जाए, जिससे किसानों को बाजार से जोड़ने का अवसर मिल सके।

# बंगाल में भाजपा का वादा, महिलाओं को 3 हजार महीना

● 6 महीने में यूसीसी लागू होगा, ममता बोली-सांप पर भरोसा करना, बीजेपी पर नहीं



कोलकाता (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी ने शुक्रवार को पश्चिम बंगाल के लिए पार्टी का घोषणा पत्र यानी भरोसे का पत्र जारी किया। इसमें महिलाओं को 3 हजार महीना, युवा बेरोजगारों को 3 हजार महीना की मदद, पहले 6 महीने में यूसीसी लागू करना और सरकारी कर्मचारियों को 45 दिन में सातवां वेतनमान देने की घोषणा की गई। केंद्रीय गृह

मंत्री अमित शाह ने पत्र जारी करते हुए कहा बंगाल की जनता के लिए पिछले 15 साल बुरे सपने के जैसे रहे हैं। ममता घुसपैठियों के जरिए तीसरी बार सीएम बनी हैं। हम घुसपैठियों को डिटेक्ट, डिलीट और डिपोर्ट करेंगे। राज्य में दो फेज में 23 और 29 अप्रैल को वोटिंग होगी। रिजल्ट 4 मई को आएगा। इधर, बंगाल की सीएम ममता बनर्जी

ने नॉर्थ 24 परगना के टेंटुलिया में चुनावी रैली की। उन्होंने यहां कहा- सांप पर भी भरोसा किया जा सकता है, लेकिन बीजेपी पर नहीं। भाजपा असम चुनाव के लिए बाहर से लोगों को लेकर आई, उसे राज्य के निवासियों के वोटों से जीत का भरोसा नहीं था। नौकरियों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देगे- मोदी सरकार प्रयास कर रही है, लेकिन बंगाल सरकार बाड़ लगाने के लिए जमीन नहीं दे रही है। हम नदी-नालों की पैट्रोलिंग की वैज्ञानिक व्यवस्था करेंगे। सभी सरकारी पद परमानेंट कराने का काम करेंगे। यह सुनिश्चित करेंगे कि करोड़ों के

घोटाले, जो पहले हुए हैं, वे न हों। पारदर्शिता के साथ युवाओं को नौकरी मिले, इसके लिए योजना बनाएंगे। उन्होंने कहा कि भारत सरकार को जिन योजनाओं का ममता बनर्जी ने कबाड़ किया है, उन्हें पुनर्जीवित करने का काम करेंगे। कोलकाता के विकास के लिए योजना लागू करेंगे, ताकि यह देश की सांस्कृतिक और औद्योगिक राजधानी बन सके। पुलिस बल समेत राज्य की सभी नौकरियों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देते। 75 लाख लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य है। हर मंडल में महिला थाना और महिला डेस्क बनाई जाएगी। हम ऐसे बंगाल का निर्माण

करेंगे कि किसी मुख्यमंत्री को यह बयान न देना पड़े कि महिला को इतनी रात में बाहर निकलने की जरूरत क्या थी। गर्भवती महिलाओं को 21 हजार रुपए और 6 पोषण किट दी जाएंगी। राज्य संचालित बसों में सभी महिलाओं को मुफ्त यात्रा भाजपा सुनिश्चित करेगी। कोलकाता मेट्रो का शत-प्रतिशत विद्युतीकरण किया जाएगा। एक ही साल में 61 रेलवे प्रोजेक्ट को जमीन देकर यह तय करेंगे कि ये रेल परियोजनाएं विकास की धुरी बनें। सरकारी जमीन से कब्जे 200 दिन में हटाए जाएंगे। घुसपैठियों को हटाने का काम करेंगे।

## शाह बोले-

## हम बंगाल के सपने को साकार करेंगे

शाह ने कहा कि गुरुदेव की जन्म जयंती के आसपास ही भयंकर कोहरा से बाहर आकर भरोसे का शासन स्थापित करेगी। 115 साल का बुरा सपना एक तरह से हर प्रकार के संकट का परिचायक रहा। हमारा संकल्पबद्ध बंगाल के विकास का रास्ता खोलेगा। जहां मन भयच्युत न हो सिर गर्व से ऊंचा हो गुरुदेव की इस भूमि को हम साकार करेंगे। बंगाल की जनता की नया रास्ता ढूँढेगी। ये भरोसा कानून के राज, रोजगार सोसाय बांगला के निर्माण का है।



## संक्षिप्त समाचार

## गुजरात में बीजेपी ने इस्टाग्राम स्टार पर फिर खेला दांव

## ● अकिता परमार की युवा मोर्चा में एंट्री के बाद टिकट भी मिला

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात में इस्टाग्राम इन्फ्लुएंसर के तौर पर चर्चा में आई बीजेपी की युवा नेता अकिता परमार फिर सुर्खियों में हैं। वह करीब तीन साल पहले तब सुर्खियों में आई थीं जब वह जिम ट्रेनर से तहसील पंचायत का चुनाव जीती थीं और फिर वडोदरा तहसील की चेयरमैन बनी थीं। सोशल मीडिया पर सेलिब्रिटी जैसा रुतबा रखने वाली अकिता परमार



## निर्दलीय लड़ने का किया ऐलान

नयनाबेन नयनाबेन परमार ने साफ कर दिया है कि अब वह निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ेंगी। उन्होंने सोशल मीडिया और 'रील लाइफ' के दिखावे पर निशाना साधते हुए कहा कि असलियत व रील लाइफ में बड़ा फर्क है।

बीजेपी ने वडोदरा जिला पंचायत की हार्ड-प्रोफाइल 'पोर' सीट के लिए एक उम्मीदवार घोषित किया। वैसे ही स्थानीय राजनीति गरमा गई है। इस विवाद में सबसे गंभीर मोड़ तब आया जब नयनाबेन परमार ने गंभीर आक्षेप लगाए। नयनाबेन परमार को पोर से मजबूत दावेदार माना गया था। नयनाबेन परमार ने पूर्व जिला बीजेपी अध्यक्ष रसिक प्रजापति पर पैसों के लेनदेन के गंभीर आरोप लगाए। इन पर रसिक प्रजापति की प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।

## डॉक्टर हरिवंश राज्यसभा के मनोनीत सांसद बने

## ● उपसभापति बन सकते हैं, कार्यकाल 2032 तक रहेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा के पूर्व उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह मनोनीत सांसद बने। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने अपने कक्ष में शपथ दिलाई। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें राज्यसभा के लिए नॉमिनेट किया था। हरिवंश का पिछला कार्यकाल 9 अप्रैल को खत्म हो गया था। उनकी पार्टी जेडीयू ने इस बार नाम नहीं दिया था। इसके बाद राष्ट्रपति ने उनका मनोनयन किया। पूर्व सीजेआई रंजन गोगोई के



रिटायर होने के बाद सीट खाली हुई थी। इसे भरने के लिए हरिवंश को चुना गया। 169 साल के हरिवंश 2032 तक राज्यसभा में रहेंगे। राज्यसभा में 12 सदस्य मनोनीत होते हैं, जिन्हें राष्ट्रपति तय करते हैं। इन्हें कला, साहित्य, विज्ञान और समाज सेवा में विशेष योगदान के आधार पर चुना जाता है। इधर, बिहार के सीएम नीतिश कुमार ने भी राज्यसभा सांसद की शपथ ली। हरिवंश को नीतिश कुमार का करीबी माना जाता था, लेकिन कुछ समय से दोनों के बीच दूरी नजर आई। 18 मार्च को पीएम मोदी ने कमबैक का हिट दिया था बजट सत्र के दूसरे चरण के दौरान राज्यसभा में रिटायर हो रहे सांसदों का विदाई समारोह 18 मार्च को हुआ था।

## भारतरत्न कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा का सागर में अनावरण आज

सागर। भारतरत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा का अनावरण 11 अप्रैल को दोपहर बारह बजे सागर के अटल पार्क परिसर में होने जा रहा है। सुप्रसिद्ध सोशलिस्ट चिंतक व राजनेता रघु ठाकुर की पहल से नगरपालिका निगम ने कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा स्थापना के लिए अटल पार्क में स्थान सुरक्षित किया है। प्रतिमा का अनावरण मध्यप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर, दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष व प्रसिद्ध पत्रकार रामबाबु राय, भारत सरकार के जलशक्ति मंत्री राजभूषण चौधरी, मध्यप्रदेश शासन के मंत्री गोविन्द सिंह राजपूत, पूर्व मंत्री भूपेन्द्र सिंह, पूर्व विधायक शैलेन्द्र जैन, प्रदीप लारिया, महापौर संगीता तिवारी, नगर निगम अध्यक्ष वृन्दावन अहिरवार की उपस्थिति में होगा। समारोह की अध्यक्षता रघु ठाकुर करेंगे। दो वर्ष पहले ही भारत सरकार ने अपने सर्वोच्च सम्मान भारतरत्न से कर्पूरी ठाकुर को मरणोपरान्त सम्मानित किया था।

उल्लेखनीय है कि कर्पूरी ठाकुर दो बार बिहार के मुख्यमंत्री, लोकसभा व बिहार विधानसभा के सदस्य रहे। पहले आम चुनाव से फरवरी 1988 तक निरंतर वे किसी न किसी सदन में गरीबों की आवाज को मुखरता से उठाते रहे। उनकी गणना भारत के उन सोशलिस्ट नायकों में होती है जिन्होंने समाजवाद को जमीन पर उतारा। रघु ठाकुर उनके घनिष्ठ साथी रहे और उनके निमंत्रण पर कर्पूरी ठाकुर सागर सहित देशभर में अलग अलग स्थानों पर गये।

## नक्सल उन्मूलन के बाद बालाघाट जिले में तेज करें विकास की गति: मुख्यमंत्री

## बालाघाट में आगामी माह होगा जनजातीय महोत्सव, मुख्यमंत्री ने ली जनजातीय महोत्सव के संबंध में बैठक

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश के बालाघाट जिले में नक्सल उन्मूलन के बाद विकास की गति को और तेज किया जाए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह द्वारा दिए गए निर्देश एवं प्रचार की गई कार्य योजना के फलस्वरूप प्रदेश से नक्सल तत्वों पर पूर्ण नियंत्रण में सफलता मिली है। नक्सलवाद की समस्या से बरसों प्रभावित रहे बालाघाट जिले सहित अन्य प्रभावित स्थानों पर अब तीव्र गति से कार्य करने की आवश्यकता है। मध्यप्रदेश सरकार विकास कार्यों की गति तेज करने को प्राथमिकता दे रही है। जनजातीय समाज की प्रतिभाओं को भी विभिन्न महोत्सवों से मंच देने का प्रयास किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में शुक्रवार को



समत्व भवन में आगामी माह बालाघाट में होने वाले जनजातीय महोत्सव के संबंध में विचार-विमर्श हुआ। जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन सहित संबंधित विभागों के अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव आदि बैठक में

उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनजातीय महोत्सव में सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों के साथ ही विभिन्न विभाग स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप शिविर आयोजित करें। धरती आबा अभियान में

हितग्राहियों को लाभान्वित करने और स्वास्थ्य विभाग द्वारा क्षेत्र में मेगा स्वास्थ्य शिविर और सिकल सेल स्क्रीनिंग का कार्य किया जाए। शिक्षा सुविधाओं के विस्तार, महिलाओं और बच्चों के कल्याण, रोजगार प्रदान करने, दिव्यांग नागरिकों को हित लाभ प्रदान करने और पूर्व वर्षों में नक्सल गतिविधियों के कारण प्रभावित हुए परिवारों की आवश्यक सहायता के लिए कार्य किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 'एक बगिया मां के नाम' कार्यक्रम अंतर्गत गतिविधियों के आयोजन, आरामना स्थलों पर सुविधाओं के विकास के कार्य भी किए जाएं। जनजातीय संस्कृति विशेषकर बैगा समुदाय से जुड़े लोक नृत्यों, खेलों में बालिकाओं के कार्य से पूर्व आयोजित किए जाने वाले बिदरी, बीज पंडू म और बड़ा देव पूजा के कार्यक्रमों का भी आयोजन होगा।

## 'ब्लैक फ्राइडे' दो हादसों में 13 की मौत

## ● यमुना में स्टीमर डूबा, 10 पर्यटकों की मौत, वृंदावन में हादसा ● रेस्क्यू के लिए इंडियन आर्मी पहुंची, सभी पंजाब के रहने वाले

मथुरा (एजेंसी)। मथुरा के वृंदावन में 30 पर्यटकों से भरा स्टीमर यमुना नदी में पलट गया। हादसे में 10 पर्यटकों की डूबने से मौत हो गई। स्टीमर में सवार सभी पर्यटक पंजाब से घूमने आए थे। डीएम चंद्र प्रकाश सिंह ने बताया, हादसा दोपहर करीब 3 बजे केसी घाट पर हुआ, जो श्रीबांके बिहार मंदिर से ढाई किमी की दूरी पर है। राहत और बचाव कार्य के लिए सेना आ गई है। गाजियाबाद से एनडीआरएफ की टीम भी वृंदावन आ गई है। डीआईजी शैलेश पांडेय ने बताया, पर्यटक 2 स्टीमर में सवार थे। एक पलट गया, जिस पर 25 से 27 लोग सवार थे। 10 लोगों की मौत हुई है। 12 घायलों को बाहर निकाल लिया गया है। 3 से 5 लोगों के अभी लापता होने की सूचना है। रेस्क्यू टीम लगातार संचर् कर रही है। पर्यटक मनोहर लाल ने बताया- हम



सभी पंजाब में लुधियाना, हिसार, और मुक्तेश्वर से हैं। तेज हवा चल रही थी। यमुना नदी के बीच में स्टीमर अचानक तेज हवा से डगमगाने लगा। स्पीड भी बढ़ गई। तभी स्टीमर पीपा पुल (पांटून पुल) से टकराकर पलट

गया। मथुरा डीएम सीपी सिंह ने वृंदावन नाव हादसे को लेकर बताया कि लुधियाना से 30 तीर्थयात्री

आए थे। वे यमुना नदी में बोट से जा रहे थे। इसी दौरान बोट पलट गई। अभी तक 9 लोगों की डेडबॉडी मिली है। 16-17 लोग सुरक्षित निकाल लिए हैं। अन्य तीर्थयात्रियों को ढूँढ़ जा रहा है। आर्मी और एनडीआरएफ टीम बुलाई गई है। हॉस्पिटलों को हार्ड अलर्ट पर रखा गया है। वृंदावन घूमने के क्रम में हादसे की जानकारी सामने आ रही है। जानकारी के अनुसार, श्रद्धालुओं से भरी नाव पांटून ब्रिज से टकराकर पलट गई। इस हादसे में 10 लोगों की मौत की जानकारी सामने आ रही है। वहीं, 22 लोगों को रेस्क्यू किया गया है।

## हिमाचल के कांगड़ा में भीषण सड़क हादसा

## ● 90 फीट गहरी खाई में गिरी ट्रैक्टर-ट्रॉली, 3 की मौत और 27 घायल



रवाना हुए थे। बताया जा रहा है कि जैसे ही ट्रैक्टर ढलियारा के खतरनाक 'खुनी मोड़' के पास पहुंचा, अचानक ब्रेक फेल हो गए। चालक वाहन पर नियंत्रण नहीं रख पाया और ट्रैक्टर-ट्रॉली सीधी खाई में जा गिरी। हादसे के तुरंत बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई।

कांगड़ा (एजेंसी)। एनएच-503 पर ढलियारा स्थित 'खुनी मोड़' के पास राधा स्वामी सत्संग घर के नजदीक एक दर्दनाक सड़क हादसा सामने आया है, जिसमें 3 की मौत और 27 श्रद्धालुओं के घायल होने की सूचना है। एक ट्रैक्टर-ट्रॉली अनियंत्रित होकर करीब 90 फीट गहरी खाई में जा गिरी, जिससे मौके पर अफरा-तफरी मच गई। मिली जानकारी के अनुसार, पंजाब के कपूरथला से श्रद्धालुओं का एक समूह ट्रैक्टर-ट्रॉली में सवार होकर देवी दर्शन के लिए हिमाचल आया हुआ था। श्रद्धालुओं ने पहले चित्तपूर्ण मंदिर में माथा टेका और इसके बाद ज्वालामुखी मंदिर के लिए



## नीतिश कुमार के अनुभव से बढ़ेगी संसद की गरिमा

## ● प्रधानमंत्री मोदी ने राज्यसभा सांसद बनने पर दी बधाई

पटना (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण कर लिया है। नीतिश कुमार के शपथ लेने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें बधाई दी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर लिखा-नीतिश कुमार जी देश के सबसे अनुभवी नेताओं में से एक हैं। सुशासन को लेकर उनकी प्रतिबद्धता की हर तरफ सराहना हुई है। उन्होंने बिहार के विकास में अमिट योगदान दिया है। उन्हें एक बार फिर संसद में देखना बहुत सुखद होगा। पीएम मोदी ने आगे लिखा- सांसद और केन्द्रीय मंत्रों के रूप में भी उन्होंने कई वर्षों तक अपनी सेवाएं दी हैं। मुझे पूरा

विश्वास है कि उनके लंबे राजनीतिक अनुभव से संसद की गरिमा और बढ़ेगी। राज्यसभा सांसद के रूप में शपथ लेने पर उन्हें हार्दिक बधाई और



आगे के कार्यकाल के लिए ढेरों शुभकामनाएं। इससे पूर्व शपथ ग्रहण से पहले संजय झा, रामनाथ ठाकुर, सम्राट चौधरी समेत अन्य मंत्रों ने सीएम नीतिश कुमार से मुलाकात की थी।

## 10 हजार से ज्यादा

## ऑनलाइन-पेमेंट पर 1 घंटे का होल्ड

## ● गलत ट्रांजेक्शन कैसिल करने का मौका मिलेगा, आ गया नया प्रस्ताव

## आरबीआई ने 'किल स्विच' का सुझाव भी दिया, डिजिटल फ्राड रूकेगा

मुंबई (एजेंसी)। जल्द ही ऐसा हो सकता है कि आपका 10 हजार से ज्यादा का ऑनलाइन ट्रांजेक्शन तुरंत न हो। उसमें 1 घंटे की देरी हो सकती है। इससे ग्राहकों को गलत ट्रांजेक्शन रोकने या कैसिल करने का मौका मिलेगा। देश में बढ़ते डिजिटल फ्राड को रोकने के लिए आरबीआई ने ये प्रस्ताव रखा है। आरबीआई का मानना है कि जालसाज अक्सर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाकर जल्दबाजी में पैसे ट्रांसफर करवाते हैं, यह देरी उस दबाव को खत्म करेगी। फिलहाल ज्यादातर डिजिटल

ट्रांजेक्शन तुरंत होते हैं, जिससे यूजर को सोचने या गलती सुधारने का मौका नहीं मिलता। सोनियर सिटीजंस के लिए 'ट्रस्टेड पर्सन' सुविधा- 70 साल से ज्यादा उम्र के बुजुर्गों और दिव्यांगों के लिए सुरक्षा और सख्त होगी। 50,000 रुपये से ज्यादा के ट्रांजेक्शन के लिए एक ट्रस्टेड पर्सन (भरोसेमंद व्यक्ति) की मंजूरी जरूरी हो सकती है। यह फ्राड के खिलाफ सुरक्षा की एक दूसरी लेयर की तरह है।

## डिजिटल पेमेंट बंद करने के लिए 'किल स्विच'

आरबीआई ने एक किल स्विच का सुझाव भी दिया है। अगर किसी ग्राहक को लगता है कि उसका अकाउंट हेक हो गया है या कोई गलत ट्रांजेक्शन हो रहा है, तो वह एक क्लिक से अपनी सभी डिजिटल पेमेंट सेवाओं को तुरंत बंद कर सकेगा। पिछले साल देश में डिजिटल फ्राड के कारण होने वाला नुकसान 22 हजार करोड़ रुपये के पार पहुंच गया। आरबीआई के अनुसार 10 हजार रुपये से ऊपर के ट्रांजेक्शन कुल फ्राड केस का सिर्फ 45 फीसदी हैं, लेकिन कुल फ्राड वैल्यू में इनकी हिस्सेदारी 98.5 फीसदी है।

## भारतरत्न कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा का सागर में अनावरण आज

सागर। भारतरत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा का अनावरण 11 अप्रैल को दोपहर बारह बजे सागर के अटल पार्क परिसर में होने जा रहा है। सुप्रसिद्ध सोशलिस्ट चिंतक व राजनेता रघु ठाकुर की पहल से नगरपालिका निगम ने कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा स्थापना के लिए अटल पार्क में स्थान सुरक्षित किया है। प्रतिमा का अनावरण मध्यप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर, दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष व प्रसिद्ध पत्रकार रामबाबु राय, भारत सरकार के जलशक्ति मंत्री राजभूषण चौधरी, मध्यप्रदेश शासन के मंत्री गोविन्द सिंह राजपूत, पूर्व मंत्री भूपेन्द्र सिंह, पूर्व विधायक शैलेन्द्र जैन, प्रदीप लारिया, महापौर संगीता तिवारी, नगर निगम अध्यक्ष वृन्दावन अहिरवार की उपस्थिति में होगा। समारोह की अध्यक्षता रघु ठाकुर करेंगे। दो वर्ष पहले ही भारत सरकार ने अपने सर्वोच्च सम्मान भारतरत्न से कर्पूरी ठाकुर को मरणोपरान्त सम्मानित किया था।

उल्लेखनीय है कि कर्पूरी ठाकुर दो बार बिहार के मुख्यमंत्री, लोकसभा व बिहार विधानसभा के सदस्य रहे। पहले आम चुनाव से फरवरी 1988 तक निरंतर वे किसी न किसी सदन में गरीबों की आवाज को मुखरता से उठाते रहे। उनकी गणना भारत के उन सोशलिस्ट नायकों में होती है जिन्होंने समाजवाद को जमीन पर उतारा। रघु ठाकुर उनके घनिष्ठ साथी रहे और उनके निमंत्रण पर कर्पूरी ठाकुर सागर सहित देशभर में अलग अलग स्थानों पर गये।

## विशेष रीजनल मेडिकल हब के लिये इंदौर-उज्जैन कॉरिडोर बेहतर जगह

## मेडिकल हब बनने से मध्यप्रदेश में रोजगार के अवसर तेजी से बढ़ेंगे : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में पाँच विशेष रीजनल मेडिकल हब स्थापित करने की योजना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मंशानुसार मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशन में विशेष रीजनल मेडिकल हब बनाने की दिशा में कार्य शुरू हो गया है। इस मेडिकल हब के बनने से मेडिकल टूरिज्म के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा। रोजगार के अवसर तेजी से बढ़ेंगे। इस दृष्टि से मध्यप्रदेश विशेषकर इंदौर में विशेष मेडिकल हब बनने की अपार संभावनाएं हैं। मध्यप्रदेश में विशेष रीजनल मेडिकल हब के लिये इंदौर-उज्जैन कॉरिडोर बेहतर जगह है। इंदौर में

एक तरफ, ऑकारेश्वर ज्योतिर्लिंग है तो दूसरी तरफ उज्जैन में प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर है। बाहर से आने वाले मंशानुसार मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशन में विशेष रीजनल मेडिकल हब बनाने की दिशा में कार्य शुरू हो गया है। इस मेडिकल हब के बनने से मेडिकल टूरिज्म के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा। रोजगार के अवसर तेजी से बढ़ेंगे। इस दृष्टि से मध्यप्रदेश विशेषकर इंदौर में विशेष मेडिकल हब बनने की अपार संभावनाएं हैं। मध्यप्रदेश में विशेष रीजनल मेडिकल हब के लिये इंदौर-उज्जैन कॉरिडोर बेहतर जगह है। इंदौर में

मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि केन्द्र सरकार की आयुष्मान स्वास्थ्य योजना से नागरिकों का निःशुल्क इलाज हो रहा है। अभी तक करोड़ नागरिकों द्वारा आयुष्मान स्वास्थ्य योजना का लाभ ले चुके हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल आज इंदौर के ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में आयोजित स्टेकहोल्डर कंसल्टेशन वर्कशॉप फॉर डेवलपमेंट ऑफ इंदौर-उज्जैन हेल्थ एंड वेलनेस टूरिज्म कॉरिडोर में अपना संबोधन दे रहे थे। इस मौके पर राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की एमडी डॉ. सलोनी

सिद्धाना, एसीएस हेल्थ श्री अशोक वर्णवाल, सभागायुक्त डॉ. सुदाम खांडे और आयुष विभाग के आयुक्त श्री शोभित जैन विशेष रूप से उपस्थित थे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि विशेष रीजनल मेडिकल हब स्थापित करने का उद्देश्य दुनियाभर से आने वाले मरीजों को विश्व स्तरीय स्वास्थ्य सेवाएं आधुनिक तकनीक और किफायती इलाज मुहैया कराना है। भारत की चिकित्सा क्षमता को दुनिया के सामने लाने में विशेष रीजनल मेडिकल हब की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। वर्तमान में भारत मेडिकल टूरिज्म इंडेक्स और वेलनेस इंडेक्स में अच्छी स्थिति में है और हमें इसे और बेहतर करना है।

## ओलेक्ट्रा का ग्रीन मोबिलिटी पर फोकस

हैदराबाद। देश की अग्रणी इलेक्ट्रिक बस निर्माता ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक लिमिटेड ने नई ब्रांड पहचान पेश की है। इसके साथ कंपनी ने खुद को इलेक्ट्रिक बस निर्माता से आगे बढ़कर मोबिलिटी और एनर्जी सॉल्यूशंस देने वाली इन्वेंशन-ड्रिवन कंपनी के रूप में स्थापित करने की दिशा तय की है। कंपनी ने 'हर दिन को बदलना' है, टैगलाइन अपनाई है, जो रोजमर्रा की यात्रा को आसान और पर्यावरण के अनुकूल बनाने की प्रतिबद्धता दर्शाती है। नई रणनीति प्रोग्रामेटिक फ्यूचरिज्म, एक्ससेल्वल इन्वेंशन और ट्रस्टेड गाइड जैसे स्तंभों पर आधारित है। पहला है भविष्य की सोच लेकिन जमीन से जुड़ी हुई। दूसरा है ऐसा नवाचारा जो हर किसी के लिए उपयोगी हो। तीसरा है भरोसेमंद मार्गदर्शक बनना। ये सिद्धांत कंपनी के काम और बाजार में उसकी भूमिका को तय करते हैं। प्रबंध निदेशक महेश बाबू ने कहा, यह बदलाव कंपनी की दीर्घकालिक सोच और विकास की दिशा को दर्शाता है। ओलेक्ट्रा के 3,600 से अधिक एंबेड्डेड देशभर में चल रहे हैं और 10 हजार से ज्यादा ऑर्डर पाइपलाइन में हैं, जिससे कंपनी ग्रीन ट्रांसपोर्ट को नई रफ्तार देने के लिए तैयार है।

# भोपाल के बड़ा तालाब में कब्जे को हटाने की कार्रवाई

## हलालपुरा में तहसीलदार टीम लेकर पहुंचे, अवैध कब्जे पर चली जेसीबी

भोपाल। भोपाल के बड़ा तालाब को अतिक्रमण मुक्त करने के लिए जिला प्रशासन ने शुक्रवार को सुबह से कार्रवाई फिर शुरू दी है। बैरागढ़ तहसीलदार हर्षविक्रम सिंह टीम के साथ हलालपुरा क्षेत्र में पहुंचे। यहां पर कई अतिक्रमण लिस्टेड किए गए हैं। इन्हें जेसीबी की मदद से हटाया जा रहा है। चार दिन पहले भदवा क्षेत्र में कार्रवाई की गई थी। बता दें कि प्रशासन ने तालाब के चारों ओर कुल 347 अतिक्रमण चिह्नित किए हैं, जिन्हें अगले 15 दिनों में हटाया जाएगा। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि भोज वेटलैंड रूल्स लागू होने (16 मार्च 2022) के बाद बने सभी निर्माण हटाए जाएंगे। बड़ा तालाब के FTL (फुल टैंक लेवल) से 50 मीटर तक के अतिक्रमण पर कार्रवाई की जा रही है। इसके चलते शुक्रवार को तहसीलदार सिंह ने हलालपुरा स्थित तालाब किनारे पर कार्रवाई शुरू की। एक मैरिज गार्डन के आगे एक फार्म हाउस पर



कार्रवाई की गई है। इसके अवैध कब्जे को हटाया जा रहा है। दो महीने में लिस्टेड किए कब्जे पिछले दो महीने से जिला प्रशासन अतिक्रमण को चिह्नित कर रहा था। टीटी नगर एसडीएम वृत्त के गौरा गांव, बिसनखेड़ी में सबसे ज्यादा कब्जे सामने आए थे। वहीं, बैरागढ़, बहेटा में भी लोगों ने तालाब की सीमा पर निर्माण कर लिए हैं। गांवों में सबसे ज्यादा कब्जे टीटी नगर एसडीएम सर्कल के गौरा गांव और बिसनखेड़ी में सबसे ज्यादा अतिक्रमण सामने आए हैं। इसके अलावा बैरागढ़ और बहेटा क्षेत्र में भी बड़े पैमाने पर निर्माण किए गए हैं। वन विहार नेशनल पार्क क्षेत्र में भी सीमांकन के दौरान करीब 2.5 किमी में 100 से ज्यादा प्लानर लगाए जाने की बात सामने आई है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह निर्माण वेटलैंड नियमों के खिलाफ हो सकता है। बैरागढ़ सर्कल में भी बड़ी संख्या में अतिक्रमण सामने आया है।

# सुरक्षित क्षेत्र सीएम हाउस के पास हो गई डॉक्टर से लूट

## बाइक से टक्कर मारकर गिराया, कूल्हे की हड्डी टूटी, रेकी के बाद वारदात

भोपाल। भोपाल में सीएम हाउस के पास दो बाइक सवार बदमाशों ने शुक्रवार को सुबह डॉक्टर के साथ लूट कर ली। आरोपियों ने बाइक से उनकी साइकिल को टक्कर मारी। आंख में मिर्च ड्रॉकने के बाद उनके हाथ में पहना हुआ 11 तोला वजनी सोने का कड़ा छीन लिया। टक्कर लगने से डॉक्टर के पांव में फ्रेक्चर आया है। घायल डॉक्टर का इलाज जेपी अस्पताल में चल रहा है। पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। घटना स्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले जा रहे हैं। टीआई भूपेंद्र कौल संधू के मुताबिक, प्रोफेसर कॉलोनी में रहने वाले 50 साल के डॉ. मनोज वर्मा टीवी ट्रेनिंग सेंटर भोपाल के डायरेक्टर हैं। हर रोज सुबह 8 बजे से दस बजे के बीच साइकिलिंग करने निकलते हैं। शुक्रवार को सुबह दस बजे किलोल पार्क से दानिश आईस्क्रीम पॉलर के बीच, पीछे से आए दो अज्ञात बाइक सवार युवकों ने उनके साइकिल को जोरदार टक्कर मारकर गिरा दिया। गिरते ही दो युवक बाइक से उतरे उन्होंने आंख में मिर्च ड्रॉकी और डॉक्टर की जेब में रखा पर्स जिसमें ढाई हजार की नकदी थी। इसी के साथ उनकी स्मार्टवॉच और हाथ में पहना सोने का कड़ा छीन लिया। इसके बाद आरोपी मौके से फरार हो गए। बदमाश हथियार से लैस थे। पीड़ित डॉ. मनोज वर्मा ने बताया कि आरोपियों ने उनके साथ मारपीट

की। जोरदार टक्कर लगने के कारण उनके कूल्हे की हड्डी टूट गई है। जेपी अस्पताल में उनका इलाज चल रहा है। फरियादी का कहना है कि आरोपियों ने पहले पूरी ईलाके की रेकी करने के बाद, महज दो मिनट के भीतर पूरी वारदात को अंजाम दिया। आरोपियों ने साफ कहा था कि विरोध किया तो हत्या कर देगे, में



घबरा गया था। एक युवक हाथ में चक्कू लिए थे। उन्होंने आंख में मिर्च भी ड्रॉक दी थी। लिहाजा मैं कुछ नहीं कर सका। हथियारों से लैस बदमाशों को देख मौके पर मौजूद लोग भी कुछ नहीं कर सके। आरोपियों के भागने के बाद राहगीरों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। लूटे गए कड़े का वजन 11 तोला से अधिक था। टीआई ने बताया कि घटना स्थल के आस पास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले जा रहे हैं। वारदात के तरीके से अंदाजा हो रहा है कि पूरी रेकी के बाद वारदात को अंजाम दिया गया है।

# एमपी में बारिश का दौर थमा, अब गर्मी पड़ेगी

## 4 से 6 डिग्री तक बढ़ेगा तापमान; 5 दिन तक कहीं पानी गिरने के आसार नहीं

भोपाल। इस साल अप्रैल में भीषण गर्मी की बजाय आंधी-बारिश और ओले वाला मौसम रहा। 1 से 9 अप्रैल तक प्रदेश में कहीं न कहीं मौसम बदला। मौसम केंद्र भोपाल के अनुसार, शुक्रवार से प्रदेश में बारिश का दौर थमा और भीषण गर्मी पड़ने लगेगी। इससे दिन के तापमान में 4 से 6 डिग्री की बढ़ोतरी होगी। बता दें कि अप्रैल की शुरुआत में ही आंधी-बारिश के स्ट्रॉंग सिस्टम एक्टिव रहे। गुरुवार को भी साइक्लोनिक सर्कुलेशन (चक्रवात) की एक्टिविटी देखने को मिली। इनके असर से पूर्वी हिस्से के उमरिया, शहडोल, डिंडौरी, अनूपपुर, मंडला, सिवनी और बालाघाट में मौसम बदला रहा। कहीं तेज आंधी चली तो कहीं हल्की बारिश दर्ज की गई। शुक्रवार से सिस्टम को असर खत्म हो जाएगा। मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया कि अगले 5 दिन तक प्रदेश में कहीं भी बारिश होने का अनुमान नहीं है। यानी, मौसम शुष्क रहेगा और तापमान में बढ़ोतरी होने लगेगी। मौसम विभाग को मानें तो 15 अप्रैल को उत्तर-पश्चिमी हिस्से में नया वेस्टर्न डिस्ट्रिक्ट्स (पश्चिमी विशोभ) एक्टिव होगा। हालांकि, एमपी में इसका असर कम ही देखने को मिलेगा। मौसम विभाग के अनुसार, जिस तरह दिसंबर-जनवरी में सर्दी और जुलाई-अगस्त में सबसे ज्यादा बारिश होती है, उसी तरह गर्मी के दो प्रमुख महीने अप्रैल और मई हैं। इस बार मध्यप्रदेश में मार्च के दूसरे पखवाड़े में पारा 41 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंचा था। मार्च के आखिरी में टेम्पेचर बढ़ने लगता है, लेकिन इस बार ऐसा मौसम नहीं रहा। आखिरी 3 दिन वेस्टर्न डिस्ट्रिक्ट्स (पश्चिमी विशोभ) और साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम की वजह से पारे में गिरावट आई। इसी तरह अप्रैल के पहले पखवाड़े में बारिश, ओले और आंधी का दौर चल रहा है। पिछले 8 दिन से प्रदेश में कहीं न कहीं बारिश हो रही है।

# सिर्फ अनाज उगाने से नहीं बढ़ेगी प्रदेश के किसानों की आय

## ● शिवराज सिंह भोपाल में बोले-किसान इंटीग्रेटेड फार्मिंग अपनाएं

## ● जीतू पटवारी की धरने की धमकी पर भी पूर्व सीएम ने दिया जवाब



भोपाल। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने खेती को लाभ का धंधा बनाने के लिए एक बड़ा विजन पेश किया है। भोपाल में प्रेस वार्ता के दौरान उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि भारतीय किसानों, विशेषकर छोटे किसानों की आर्थिक स्थिति केवल गेहूँ और धान पैदा करने से नहीं सुधरेगी। आय में क्रांतिकारी

बदलाव के लिए किसानों को 'इंटीग्रेटेड फार्मिंग' (एकीकृत कृषि) की ओर मुड़ना ही होगा।

## अनाज के साथ शहद और मछली भी पालें किसान

शिवराज सिंह ने कहा कि भारत में औसतन जोत का आकार मात्र 0.96 हेक्टेयर है। इतने छोटे खेत में पारंपरिक खेती से गुजारा मुश्किल है। उन्होंने समाधान देते हुए कहा, किसान अनाज के साथ-साथ फल, सब्जियां, दूध, और 'श्री अन्न' (मोटा अनाज) पर ध्यान दें। उन्होंने कहा कि, एक ही खेत में फसल के साथ पशुपालन, मधुमक्खी पालन, मछली पालन और कृषि वानिकी जैसे काम करने होंगे। वहीं, नई तकनीकों और प्राकृतिक खेती के माध्यम से उत्पादन की लागत घटना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने बताया कि इसी 'इंटीग्रेटेड मॉडल' का लाइव प्रदर्शन दिखाने के लिए 11 से 13 अप्रैल तक रायसेन में 'उन्नत कृषि महोत्सव' आयोजित किया जा रहा है, जहां देश के दिग्गज वैज्ञानिक किसानों को ट्रेनिंग देंगे। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी द्वारा बोरियां लेकर उनके बंगले पर धरने को लेकर शिवराज सिंह चौहान ने इसे 'अपरिपक्व राजनीति' करार देते हुए कहा, अगर कृषि सुधार के लिए कोई काम होता है, तो उसका स्वागत है। लेकिन किसी नेता के बंगले पर बिना किसी पूर्व सूचना के बोरे लेकर पहुंच जाना एक बड़े नेता के लिए शोभा नहीं देता। राजनीति गरिमा और तथ्यों के साथ होनी चाहिए। मंत्री ने किसानों को आश्वासन दिया कि ईरान और पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष के कारण वैश्विक स्तर पर खाद (डीएपी और यूरिया) की कीमतें बढ़ रही हैं, लेकिन भारत सरकार इसका बोझ किसानों पर नहीं आने देगी।

# वंदे मातरम् विवाद में बैकफुट पर पहुंची कांग्रेस

## चुप्पी से अल्पसंख्यक नेता नाराज, भाजपा हुई आक्रामक

इंदौर। इंदौर के नगर निगम सम्मेलन में 'वंदे मातरम्' विवाद से राजनीति गरमा गई है। कांग्रेस के दो पार्षदों द्वारा 'वंदे मातरम्' नहीं गाए जाने और विवादित बयान देने पर कांग्रेस ने पल्ल झाड़ लिया है। कांग्रेस नेताओं ने दोनों महिला पार्षदों का बचाव नहीं किया। इससे कांग्रेस पार्टी के अन्य अल्पसंख्यक नेता नाराज हो गए हैं। इस पूरे मामले में कांग्रेस बैकफुट पर नजर आ रही है, जबकि भाजपा अब इस मुद्दे पर कांग्रेस को घेरने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। शुक्रवार को इंदौर के कई बाड़ों में भाजपा कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस के पुलते जलाए और 'वंदे मातरम्' गीत गाया। विवाद सामने आने के बाद इंदौर शहर कांग्रेस ने सभी कार्यक्रमों में 'वंदे मातरम्' गीत अनिवार्य कर दिया है। पार्षद रबीना इक़बाल के खिलाफ निष्कासन का प्रस्ताव भी भोपाल भेज दिया गया है। उधर, इस मामले में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने भी चुप्पी साध रखी



है। छतरपुर दौरे में मीडियाकर्मियों ने जब उनसे इस मामले में सवाल पूछा, तो पटवारी ने हाथ जोड़ लिए और बिना कुछ बोले आगे बढ़ गए। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि 'वंदे मातरम्' जैसे मुद्दे पर चुप्पी साधना कांग्रेस के लिए मुश्किलें बढ़ा सकता है, खासकर तब जब विपक्ष इसे राष्ट्रवाद से जोड़कर बड़ा मुद्दा बना रहा है। फिलहाल, जीतू पटवारी की इस चुप्पी को लेकर सियासी गलियारों में तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। अब देखना होगा कि कांग्रेस इस विवाद पर आधिकारिक

रूप से क्या रुख अपनाती है। कांग्रेस नेता अमीनुल खान सूरी ने कहा कि 'वंदे मातरम्' गाने से उन्हें कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन उनकी आपत्ति शहर कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा इसे कार्यक्रमों में अनिवार्य किए जाने पर है। उन्होंने कहा, 'हम कांग्रेस में उसकी विचारधारा से जुड़े हैं। सबसे पहले 'वंदे मातरम्' कांग्रेस के अधिवेशन में गाया गया था। इसे इस तरह अनिवार्य करना अनुचित है। देशभक्ति कोई आदेश नहीं, बल्कि एक एहसास है। वंदे मातरम् विवाद मामले में प्रदेश भाजपा अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने कांग्रेस को घेरा। उन्होंने कहा कि वंदेमातरम् सिर्फ एक गीत नहीं है, यह देशभक्ति का प्रतिक है लेकिन कांग्रेस इस भावना से खुद को नहीं जोड़ पाई है। राष्ट्र धर्म से ऊपर है, लेकिन इंदौर की महिला कांग्रेस पार्षदों का बताव देशभक्ति की भावना के विपरित है।

# सरकार समाज के सभी वर्गों के कल्याण और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध: उप मुख्यमंत्री देवड़ा

भोपाल। उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने 'गांव चलो अभियान' के अंतर्गत जिले के विभिन्न ग्रामों का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने ग्राम धुंधड़का, धमनारा, गुलियाना, हतुनिया, जोगीखेड़ा, रातीखेड़ी, खजूरी फंटा, झिरकन, सिखेड़ी फंटा, बडवन फंटा, भाटेंवासा, अफजलपुर, राणखेड़ा, बिलात्री, चिरमोलिया, खाना, लोधा, सूरी, बोरखेड़ा एवं गारियाखेड़ा में पहुंचकर ग्रामीणों से संवाद किया। इस अवसर पर जिला योजना समिति सदस्य राजेश दीक्षित, जनपद पंचायत अध्यक्ष श्री बसंत शर्मा सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी-कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री देवड़ा ने गांव, बस्ती एवं चौपाल पर पहुंचकर ग्रामीणों से भेंट की तथा केंद्र एवं राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंच रहा है और लगातार विकास कार्य किए जा रहे हैं। एक कार्य पूर्ण होने से

पहले ही नए विकास कार्यों की सीमाएं क्षेत्र को मिल रही हैं। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि दूरदर्शी नीतियों के परिणामस्वरूप आज भारत विश्व पटल पर एक सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ है। केंद्र सरकार की योजनाएं जैसे आयुधाना भारत योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्वला गैस योजना, स्वच्छ भारत मिशन, हर घर जल योजना एवं किसान सम्मान निधि से गरीब, किसान, महिला एवं वंचित वर्ग के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि राज्य सरकार भी सभी वर्गों के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए लाइली बहना योजना, बेटियों के लिए लाइली लक्ष्मी योजना, किसानों की आय बढ़ाने हेतु कृषि योजनाएं तथा युवाओं के लिए कौशल विकास एवं स्वरोजगार योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इन योजनाओं से समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुंचाना सरकार का लक्ष्य है।

## एमपी के पांच चर्चित आईएसएस अधिकारियों को मिली नई पोस्टिंग

# सोनिया मीना से लेकर प्रियंक मिश्रा तक के 'बड़े कद'

भोपाल। मध्य प्रदेश की सरकार ने गुरुवार को रात बड़ी प्रशासनिक सर्जरी की है। एक साथ 14 जिलों के कलेक्टर बदले गए हैं। इस लिस्ट में राजधानी भोपाल भी शामिल है। भोपाल कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह को मुख्यमंत्री मोहन यादव का सचिव बनाया गया है। वहीं, धार कलेक्टर प्रियंक मिश्रा को अब भोपाल की जिम्मेदारी मिली है। इसके साथ ही नर्मदापुरम कलेक्टर सोनिया मीना का भी कद बढ़ा है। उनकी शिफ्टिंग मंत्रालय में हुई है। इसी तरह से उस सूची में पांच ऐसे अधिकारियों के नाम हैं, जो अपनी पोस्टिंग के दौरान चर्चा में रहे हैं। इन अधिकारियों को अब नई जिम्मेदारी मिली है। आइए बताते हैं कि तबादले के बाद किसी क्या जिम्मेदारी मिली है।



मीना का भी तबादला हो गया है। वह दो साल दो महीने से नर्मदापुरम की कलेक्टर थीं। सोनिया मीना 2013 बैच की आईएसएस अधिकारी हैं। नर्मदापुरम कलेक्टर रहने के दौरान वह कई बार विवादों में भी आई हैं। लेकिन मध्य प्रदेश में उनकी छवि एक कड़क अधिकारी के रूप में है। अपने काम के लिए ही वह जानी जाती रही हैं। सोनिया मीना वित्त विभाग में अपन सचिव बनी हैं। अब वह भोपाल में रहेंगी।

बैतूल कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी का बड़ा कद- वहीं, 2012 बैच के आईएसएस अधिकारी नरेंद्र सूर्यवंशी बैतूल के कलेक्टर थे। वह दो साल दो महीने से वहां तैनात थे। उनका कद इस तबादले की सूची में बढ़ गई है। अब बैतूल जैसे छोटे जिले से निकालकर उन्हें विन्ध्य क्षेत्र के सबसे बड़े जिले रीवा का कलेक्टर बनाया गया है। इस हिसाब से देखें तो यह उनके लिए प्रमोशन ही है। नरेंद्र सूर्यवंशी काफी चर्चित अधिकारी रहे हैं। अपने कार्यों के दौरान उन्होंने कई बार आपा भी

खोया है। आईएसएस अफसर प्रतिभा पाल को मिली रीवा की जिम्मेदारी- इसके साथ ही 2012 बैच की आईएसएस अधिकारी प्रतिभा पाल को भी बड़ी जिम्मेदारी मिल गई है। वह तीन साल से रीवा की कलेक्टर थीं अब उन्हें सागर जैसे अहम जिले की जिम्मेदारी दी गई है। प्रतिभा पाल की गिनती कर्मठ अधिकारियों के रूप में होती रही है। वह इंदौर नगर निगम की कमिश्नर भी रही हैं। इनके कार्यकाल के दौरान ही बावड़ी हदसा हुआ था। हालांकि इनके कार्यकाल के दौरान निगम ने कई कॉमिटीना भी स्थापित किए थे। प्रतिभा पाल मां बनने से 12 घंटे पहले तक ड्यूटी करती रही थीं। 2015 बैच की आईएसएस अधिकारी बिदिशा मुखर्जी मैहर जिले की नई कलेक्टर बनी हैं। वह अभी पीएचई विभाग में उप सचिव थीं। इससे पहले टूरिज्म में भी रही हैं। सोशल मीडिया पर भी बिदिशा मुखर्जी एक्टिव रहती हैं। वह कई जिलों में जिला पंचायत की सईओ भी रही हैं।

# भोपाल मैनिट-एनएचडीसी के बीच एमओयू

## ऊर्जा क्षेत्र में रिसर्च, स्किल और नवाचार को मिलेगा बढ़ावा

## छात्रों को इंटरशिप व तकनीकी प्रशिक्षण भी देंगे, बड़ी तैयारी

भोपाल। भोपाल स्थित मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (मैनिट) और एनएचडीसी के बीच ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग को लेकर महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस साझेदारी का उद्देश्य बिजली और ऊर्जा के क्षेत्र में अनुसंधान, नवाचार, परामर्श और कौशल विकास को बढ़ावा देना है। इस समझौते के जरिए छात्रों को व्यावहारिक अनुभव, इंटरशिप और तकनीकी प्रशिक्षण के बेहतर अवसर मिलेंगे। दोनों संस्थानों का मानना है कि यह पहल देश के ऊर्जा भविष्य को मजबूत बनाने की दिशा में अहम कदम साबित होगी। एमओयू हस्ताक्षर समारोह में दोनों संस्थानों के कई वरिष्ठ अधिकारी और विशेषज्ञ मौजूद रहे। मैनिट की ओर से डॉ. अनुपमा शर्मा, डॉ. अरविंद मिश्र, डॉ. संजीव सिंह, डॉ. अमित ओझा, डॉ. अमित भगत और डॉ. मीना अग्रवाल शामिल हुईं। वहीं एनएचडीसी की ओर से प्रबंध निदेशक आम प्रकाश के नेतृत्व में महाप्रबंधक अशोक कुमार सिंह और डीजीएम दीपक सक्सेना उपस्थित रहे।



## सहयोग के चार प्रमुख हिस्से

संयुक्त अनुसंधान: जलविद्युत और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में रिसर्च प्रोजेक्ट्स पर मिलकर काम किया जाएगा। परामर्श सेवाएं:

औद्योगिक परियोजनाओं के विकास में मैनिट के विशेषज्ञों की भूमिका अहम होगी। कौशल विकास: छात्रों को इंटरशिप, प्रशिक्षण और विशेष तकनीकी कार्यक्रमों से जोड़ा जाएगा। ज्ञान का आदान-प्रदान: ग्रीन एनर्जी और नई

तकनीकों पर ज्ञान साझा कर क्षमता निर्माण किया जाएगा। इस साझेदारी का सबसे बड़ा फायदा छात्रों को मिलेगा। उन्हें न केवल सैद्धांतिक ज्ञान मिलेगा, बल्कि इंडस्ट्री के साथ सीधे जुड़कर काम करने का अवसर भी मिलेगा। इंटरशिप और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से और ऊर्जा क्षेत्र की वास्तविक चुनौतियों और तकनीकों को समझ सकेंगे, जिससे उनकी रोजगार क्षमता भी बढ़ेगी। इस समझौते को अंतिम रूप देने में मैनिट के निदेशक प्रो. करुणेश कुमार शुक्ला की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनके मार्गदर्शन में यह पहल संभव हो पाई। समन्वय टीम ने उनके नेतृत्व और सहयोग के लिए आभार भी व्यक्त किया, जिसने इस साझेदारी को मजबूत आधार दिया। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि यह समझौता भारत के ऊर्जा क्षेत्र के लिए दीर्घकालिक समाधान विकसित करने में सहायक होगा। एनएचडीसी के औद्योगिक अनुभव और मैनिट की अनुसंधान क्षमता के संयोजन से नई तकनीकों और नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।



<span>महात्मा फुले जयंती</span>
<b>अमित राय</b>
<span></span> <div>सामाजिक शोध अध्येता</div>

महात्मा जोतिराव गोविंदराव फुले ( 1827-1890 ) ऐसे पहले विचारक थे जो उन्नीसवीं सदी में बौद्धिक और सामाजिक जीवन में अस्पृश्यता के मुद्दे को सबसे पहले जोरदार तरीके से सामने लाये। उन्होंने समाज में व्याप्त पवित्रता और वर्ण व्यवस्था की धारणा के आधार पर भेदभावपूर्ण सामाजिक विभाजनों की निंदा की और इसे पूरी तरह से ब्राह्मणवादी शरारत और चालाकी का उत्पाद माना और बताया कि इन्होने ही निचले वर्गों अर्थात् शूद्रों और अतिशूद्रों का शोषण करने के लिए कुशलतापूर्वक योजना बनाई।

उन्होंने केवल सामाजिक विभेद की बात नहीं की बल्कि असमान सामाजिक संबंधों के लगभग पूरे दायरे में क्रांतिकारी परिवर्तन की वकालत की और एक नयी मानक व्यवस्था की नींव बनाने के लिए समानता, स्वतंत्रता, मानवतावाद और गरिमा के सिद्धांतों पर जोर दिया। समानता,सामाजिक परिवर्तन के फुले के दर्शन का आधार बनी। अस्पृश्यता के खिलाफ उनकी प्रतिबद्धता केवल उपदेश तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उसे उन्होंने व्यवहारिक कार्यों में भी तब्दील किया,उन्होंने अछूत लड़कियों के लिए स्कूल खोला और अपने सार्वजनिक और निजी जीवन में अस्पृश्यता का खुला विरोध किया,ऐसा उन्होंने इतिहास के उस कालखंड में किया जब ब्राह्मणवादी कट्टरता की पहचान थी और जाति से जुड़े भेदभाव पूर्ण आचरण के लिए बहुत कम सहिष्णुता थे।संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था कठोर जाति प्रतिबंधों द्वारा शासित थी,जिसके उल्लंघन के लिए दंडात्मक प्रावधान थे। किसी व्यक्ति की स्थिति उसकी जाति पर निर्भर करती थी और यह उसके जीवन में उसकी योग्यता या उपलब्धियों से परे अपरिवर्तनीय थी। इस सामाजिक मैट्रिक्स को चुनौती देना बेहद मुश्किल हो सकता था; इसके लिए बहुत बड़ी कुर्बानियाँ देनी पड़ीं और उन्होंने अपने आजीवन मिशन को हासिल करने के लिए पूरा जीवन समर्पित किया। फुले भारतीय इतिहास में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने ब्राह्मणवाद की विचारधारा (पौराणिक कथाओं और उस पर आधारित संपूर्ण सामाजिक संरचना की पवित्रता) को जड़ से खारिज कर दिया।

महत्वपूर्ण यह है कि फुले का ध्यान सामाजिक मुक्ति के लिए किसी खास जाति पर नहीं था। वह पूरे हाशिये पर पड़े इंसानों के लिए समानता, स्वतंत्रता और गरिमा के लिए खड़े थे, चाहे वे शूद्र, अतिशूद्र, आदिवासी, किसान, महिलाएँ, मजदूर, कुष्ठ रोगी, मछुआरे, चरवाहे, भिखारी या ऐसे ही दूसरे लोग हों।

फुले के जीवनी लेखक के शब्दों में, ‘यह वे (जोतिराव) ही थे जिन्होंने अछूत वर्गों के बीच से नेताओं का निर्माण किया। वे अछूतों के इलाकों में जाते थे और उनमें से ऊर्जावान और बुद्धिमान लोगों को समाज में सक्रिय होने, कुछ सामाजिक कार्य करने, लिखने और बोलने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उनके द्वारा चुने गए ऐसे लोगों में

<span>महात्मा फुले जयंती</span>
<b>अभिषेक झरवडे</b>
<span></span>

‘**वि**द्या बिना मति गई, मति बिना नीति गई, नीति बिना गति गई, गति बिना वित्त गया, वित्त बिना शूद्र खचले, इतना सब

अनर्थ एक अविद्या ने किया।’

यह पंक्तियाँ शिक्षा के अपरिहार्य महत्व को रेखांकित करती हैं—जहाँ शिक्षा के अभाव में व्यक्ति का विवेक, नैतिकता, प्रगति और आर्थिक आधार, सब कुछ नष्ट हो जाता है। ये कालजयी विचार महान समाज-सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले के हैं, जिन्होंने अपने जीवन भर के संघर्षों से समाज में व्याप्त कुुरीतियों के विरुद्ध एक वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया। आज, 11 अप्रैल को उनकी जयंती के अवसर पर, हम न केवल उनके जीवन, विचारों और कार्यों का स्मरण करेंगे, बल्कि यह विश्लेषण भी करेंगे कि क्या उनके सपनों का भारत आज यथार्थ के धरातल पर आकार ले पाया है?

ज्योतिबा फुले का जन्म 11 अप्रैल 1827 को महाराष्ट्र में हुआ था। उनका परिवार माली समाज से था, जिनका पारंपरिक कार्य बागवानी था। उस समय समाज में माली जाति को निचली नजर से देखा जाता था। बचपन में ही माँ का साया उठ जाने के कारण उनके पिता ने ही उन्हें पाला-पोसा।

फुले की शुरुआती पढ़ाई पणोजी के एक स्कूल में हुई, लेकिन जातिगत कट्टरपंथ के कारण उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। यहीं से उन्होंने भेदभाव, छुआछूत और ऊंच-नीच का कड़वा अनुभव महसूस किया। यही वह समय था जब उनके भीतर जातिवाद के खिलाफ विद्रोह की भावना ने जन्म लिया।

स्कूल से निकाले जाने के बाद भी ज्योतिबा ने हिम्मत

<span>पुस्तक समीक्षा</span>
<b>मोहन वर्मा</b>
<span></span>
<b>समीक्षक</b>

‘**कि** सी छूटे हुए दिन में’ युवा कवि अमेय कांत का दूसरा कविता संग्रह है, जिसमें उनकी 75 कविताएँ संकलित हैं। इससे पहले कवि का पहला संग्रह, ‘समुद्र से लौटेंगे रेत के घर’, 2016 में प्रकाशित हुआ था, और जिसे पुनर्नाम पुरस्कार और दिनकर सोनवलकर स्मृति दिनकर सृजन सम्मान भी मिला था। यह कृति अपने नाम की तरह ही स्मृतियों, अधूरे पलों और बीते हुए समय की गूंज को समेटे हुए है। लेखक ने बेहद सरल, लेकिन गहरी भाषा में उन एहसासों को व्यक्त किया है, जिन्हें हम अक्सर महसूस तो करते हैं, लेकिन शब्दों में नहीं कह पाते।

युवा अमेय कांत की दृष्टि एक परिपक्व कवि की दृष्टि है, जो वस्तु, घटना, शहर, मौसम, युद्ध और आम जन के भीतर-बाहर को एक्सरे जैसी दृष्टि से

# वीथिका

# समानता आधारित सामाजिक परिवर्तन का दर्शन

**फुले का ध्यान सामाजिक मुक्ति के लिए किसी खास जाति पर नहीं था । वह पूरे हाशिये पर पड़े इंसानों के लिए समानता, स्वतंत्रता और गरिमा के लिए खड़े थे, चाहे वे शूद्र, अतिशूद्र, आदिवासी, किसान, महिलाएँ, मजदूर, कुष्ठ रोगी, मछुआरे, चरवाहे, भिखारी या ऐसे ही दूसरे लोग हों । फुले के जीवनी लेखक के शब्दों में, ‘यह वे (जोतिराव) ही थे जिन्होंने अछूत वर्गों के बीच से नेताओं का निर्माण किया । वे अछूतों के इलाकों में जाते थे और उनमें से ऊर्जावान और बुद्धिमान लोगों को समाज में सक्रिय होने, कुछ सामाजिक कार्य करने, लिखने और बोलने के लिए प्रोत्साहित करते थे । उनके द्वारा चुने गए ऐसे लोगों में**

**से एक गोपाल बाबा वलंगकर थे ।’ इसके अलावा, अछूतों, विशेषकर लड़कियों के लाभ के लिए फुले द्वारा की गई शैक्षिक पहल, पूरे उन्नीसवीं सदी के भारतीय बौद्धिक इतिहास में अभूतपूर्व थी।**

फुले के विचार,उन्नीसवीं सदी के महाराष्ट्र में मुख्यधारा के सामाजिक सुधार आंदोलन से एक क्रांतिकारी प्रस्थान का प्रतिनिधित्व करते थे। बौद्धिक रूप से वे गैर-ब्राह्मणवादी मध्ययुगीन संत-कवियों, विशेष रूप से कबीर की तर्ज पर एक कट्टरपंथी गैर-अनुरुपतावादी विश्वदृष्टि से संबंधित थे, जिसे उन्होंने अपने स्वयं के निरंतर विकसित होने वाले विश्वव्यापीकरण और अति-आधुनिकतावाद द्वारा और समृद्ध किया। उनका जीवन और समाज का दर्शन इतना व्यापक था कि इसमें जाति, समुदाय, क्षेत्र या धर्म के बावजूद समाज के लगभग हर उर्पीड़ित और दमित वर्ग को शामिल किया जा सकता था। वे राष्ट्रीयता की सीमाओं को भी पार करने के लिए प्रवृत्त हुए और अंतर्राष्ट्रीयता की वकालत करने में रवींद्रनाथ टैगोर के सही अग्रदूत होने का दावा कर सकते हैं,जो फुले की अवधारणा में विशेष रूप से उनकी गहरी आध्यात्मिकता में निहित था। फुले के विचार उनकी तीन प्रमुख रचनाओं में समाहित हैं - गुलामगिरी (दासता) 1873 में प्रकाशित, शेतकरीचा आसुद (कृषक का चाबुक) 1883 में लिखी गई लेकिन बाद में प्रकाशित हुई और सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक (सत्य के सार्वभौमिक धर्म पर पुस्तक) 1889 में लिखी गई लेकिन मरणोपरांत 1891 में प्रकाशित हुई। उन्होंने कई अभंग (कविताएँ) भी लिखे और विविध प्रकार की अन्य रचनाएँ भी लिखीं। इन सभी रचनाओं के साथ-साथ उनके रोजमर्रा के जीवन में, अस्पृश्यता के खिलाफ उनकी प्रतिबद्धता उसके खिलाफ स्पष्ट जुनून बने रहे,जो आधुनिक भारतीय इतिहास में किसी भी एक व्यक्तित्गत प्रयास में पहले कभी नहीं देखे गए। गुलामगिरी समानता के लिए, सामाजिक परिवर्तन के लिए फुले के दर्शन का एक उा घोषणापत्र था, इसने सामाजिक समानता और सम्मान की मांग की, विशेष रूप से शूद्रों और अतिशूद्रों को ब्राह्मणवादी कट्टरता, वचंस्व और भेदभाव की गुलामी से मुक्ति दिलाने की मांग की।

फुले का सार्वजनिक जीवन में आने का मकसद ही शूद्रातिशूद्रों के हक में था। 1882 में शिक्षा आयोग को सौंप गए अपने ज्ञापन में उन्होंने अछूत समुदाय की लड़कियों की शिक्षा के लिए की गई अपनी गतिविधियों की एक झलक दी। उनके अपने शब्दों में, ‘महिला विद्यालय की स्थापना के एक साल बाद मैंने निम्न वर्गों, खास तौर पर महार और मांग के लिए एक स्वदेशी मिश्रित विद्यालय भी स्थापित किया। बाद में इन वर्गों के लिए दो और विद्यालय जोड़े गए... मैं उनमें करीब नौ से दस साल तक काम करता रहा ’। उनकी



पत्नी सावित्रीबाई फुले, जिन्होंने उनके सुधारवादी प्रयासों में उनका साथ दिया, को कई बार इन स्कूलों में जाते समय ऊंची जाति के गुंडों द्वारा फेंकी गई ईंटों का सामना करना पड़ा। दंपति को उनके पैतृक घर से बेदखल भी होना पड़ा, क्योंकि उन्होंने जो कहा, वह करने का साहस किया, अशिक्षित निचले तबके को शिक्षित किया और इस तरह ब्राह्मणवादी पदानुक्रम के खोखलेपन और उसके भेदभावपूर्ण नुस्खों की दमनकारी प्रकृति को उजागर किया। दबे-कुचले और वंचित लोगों, खास तौर पर शूद्रों और अति-शूद्रों के उत्थान के लिए अपने काम को अग्रिम देने के लिए उन्होंने 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की। समानता के लिए संघर्ष करना फुले की आस्था का एक स्थायी विषय रहा। अपनी पुस्तक गुलामगिरी की प्रस्तावना में ही उन्होंने अपने उद्देश्य और प्रयासों का संक्षेप प्रस्तुत किया।

उन्होंने लिखा कि ‘सैकड़ों सालों से शूद्र और अतिशूद्र ब्राह्मणों के शासन के तले अनगिनत मुसीबतों का सामना कर रहे हैं और दयनीय हालत में जी रहे हैं... इस किताब का एकमात्र मकसद इन सभी सताए हुए लोगों का ध्यान उनकी अपनी हालत की ओर दिलाना है और उन्हें अपनी स्थिति पर ठीक से सोचने के लिए मजबूर करना है ताकि वे खुद को ब्राह्मणों की गुलामी, उनके अत्याचार और अन्याय से आजाद कर सकें ’।

उन्होंने शूद्रों और अतिशूद्रों को ‘रक्त-भाई’ माना, अर्थात्

# शिक्षा की शक्ति से समाज को बदलने वाले नायक

**फुले की शुरुआती पढ़ाई पणोजी के एक स्कूल में हुई, लेकिन जातिगत कट्टरपंथ के कारण उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया । यहीं से उन्होंने भेदभाव, छुआछूत और ऊंच-नीच का कड़वा अनुभव महसूस किया । यही वह समय था जब उनके भीतर जातिवाद के खिलाफ विद्रोह की भावना ने जन्म लिया । कूल से निकाले जाने के बाद भी ज्योतिबा ने हिम्मत नहीं हारी । वे दिन में खेतों में काम करते और रात में खुद से पढ़ाई करते रहे । उनकी लगन को देखते हुए 1841 में उनके पड़ोसी गण्फार बेग और लेजिट ने उनकी मदद की, जिससे उन्हें एक मिशनरी स्कूल में दाखिला मिल पाया और वे अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर सके ।**

नहीं हारी। वे दिन में खेतों में काम करते और रात में खुद से पढ़ाई करते रहे। उनकी लगन को देखते हुए 1841 में उनके पड़ोसी गण्फार बेग और लेजिट ने उनकी मदद की, जिससे उन्हें एक मिशनरी स्कूल में दाखिला मिल पाया और वे अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर सके।

एक बार ज्योतिराव फुले अपने एक ब्राह्मण मित्र की बारात में शामिल होने गए, लेकिन सिर्फ अपनी जाति (माली) के कारण उन्हें अपमानित कर बारात से निकाल दिया गया। इस घटना ने उनके मन पर गहरा आघात किया। उन्होंने उसी क्षण ठान लिया कि समाज में फेली इन कुुरीतियों और छुआछूत को जड़ से खत्म करने के लिए खुद को शिक्षित करना बेहद जरूरी है।इसके बाद, फुले ने गहराई से अध्ययन शुरू किया। उन्होंने धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ कबीर, रामानंद और थॉमस पेन जैसे विचारकों को पढ़ा। इन महान लोगों के विचारों ने फुले के जीवन और उनके संघर्ष को एक नई दिशा दी।

महात्मा ज्योतिबा फुले का विवाह कम उम्र में ही सावित्रीबाई से हो गया था। उन्होंने अपनी पत्नी को शिक्षित किया और वर्ष 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए भारत का पहला स्कूल खोला, जहाँ सावित्रीबाई फुले देश की प्रथम महिला शिक्षिका बनीं। उस दौर में यह एक क्रांतिकारी कदम था। शिक्षा के प्रति उनके इस समर्पण का समाज में कड़ा विरोध हुआ, यहाँ तक कि सावित्रीबाई पर रास्ते में गोबर और पत्थर भी फेंके गए, लेकिन वे अपने पथ से तनिक भी विचलित नहीं हुईं।



ज्योतिबा ने सती प्रथा जैसी कुुरीतियों का खुलकर विरोध किया और विधवाओं की दयनीय स्थिति को देखकर उनके पुनर्विवाह तथा शिक्षा के लिए विशेष प्रयास किए। समाज सेवा के अपने कार्यों में उन्होंने कभी जाति-पाति के बंधनों को आड़े नहीं आने दिया; वे जाति-भेद से ऊपर उठकर हर पीड़ित व्यक्ति की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

फुले ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक

एक ही सामाजिक वंश से संबंधित लोग, इस प्रकार उनके और उनके बीच का अंतर पूरी तरह से धुंधला हो गया। ‘हमारे पूर्वज और तथाकथित अछूतों (महार और मांग, आदि) के पूर्वज आपस में लगे भाई थे... उनके अपने सगे-संबंधी थे। शूद्रों को मूल रूप से स्वदेशी क्षत्रिय माना जाता था जिन्हें आक्रमणकारी आर्यों ने हराया और गुलाम बनाया। उन पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए, भाटों ( आर्यन ब्राह्मणों ) ने जाति व्यवस्था की घातक कल्पना का आविष्कार करके उनके बीच फूट पैदा की। उन्होंने जनता के भोले-भाले दिमागों को गुमराह करने के लिए झूठे शास्त्रों की रचना की। कुछ शूद्र जिन्होंने अपनी मातृभूमि की रक्षा में इस अन्याय के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी, उन्हें कठोर अपमान और निंदा का सामना करना पड़ा। उन्हें उनके मूल शूद्र रैंक से ‘एक अलग श्रेणी में अलग कर दिया गया’ और अछूत के रूप में कल्कित किया गया। इस तरह उन्हें ‘रोजी-रोटी के साधनों से वंचित’ कर दिया गया और वे गरीबी और दु:ख में जीने लगे और उन्हें ‘मरे हुए जानवरों का मांस खाने की हद तक’ मजबूर होना पड़ा।

उन्होंने पाया कि उनकी हालत नीग्रो गुलामों से भी बदतर थी। ‘ये (धूर्त) ब्राह्मण... हमारी भाली-भाली अंग्रेजी सरकार की आंखों में धूल झाँक रहे हैं और भारत में शूद्रों और अतिशूद्रों पर अमेरिकी गुलाम मालिकों द्वारा अपने नीग्रो गुलामों के साथ किए गए व्यवहार से भी अधिक क्रूरता से अत्याचार कर रहे हैं। ‘

फुले की अगली मौलिक रचना शेतकर्याचा आसुद लगभग पूरी तरह से ब्राह्मणवादी शोषण और उच्च औपनिवेशिक कराधान के दोहरे बोझ तले दबे किसानों की समस्याओं को समर्पित है। यहाँ भी, शूद्रों और अतिशूद्रों दोनों के लिए उनकी समान भावना और उनकी दयनीय दुर्दशा से बाहर निकलने का उनका प्रयास उनकी बौद्धिक चिंता का केंद्र बिंदु बना। उनके विचार में,शूद्र और अतिशूद्र जो खेती करने वाली आबादी का बड़ा हिस्सा थे,ब्राह्मणवादी और औपनिवेशिक शोषण के सबसे बुरे शिकार थे।

दरअसल फुले का सामाजिक परिवर्तन का दर्शन मूलतः उनके गहन मानवतावाद और ईश्वरीय न्याय में दृढ़ विश्वास के साथ तीव्र आध्यात्मिकता से निकला था। उनके अनुसार, हम सभी एक निर्माता, ‘सर्वशक्तिमान’, ‘सर्वव्यापी’, ‘निराकार परमात्मा’, ‘हम सभी के सार्वभौमिक निर्माता और सार्वभौमिक पिता सर्वशक्तिमान ईश्वर’ की संतान हैं। ‘केवल एक ही प्रामाणिक निर्माता है और सभी मनुष्य एक हैं। संप्रभु सत्य उसका प्रतीक है। उसने सभी मानवजाति का निर्माण किया है। सभी मनुष्य उसके बच्चे हैं जिनकी वह (प्यार से) रक्षा करता है।’ ईश्वरीय न्याय के मूल सिद्धांत के रूप में अंतर्निहित समानता का यह विचार पूरे विश्व की

व्यवस्था में लागू होना चाहिए। इसमें ऊंच नीच और भेदभाव के लिए कोई जगह नहीं है। धर्मशास्त्र में जिस तरह आस्तिक और नास्तिक शब्द का प्रयोग होता है, उस तरह डेईस्ट का प्रयोग नहीं होता। डेईस्ट एक ऐसा विचार था, जिसमें ईश्वर के अस्तित्व और ईश्वर के द्वारा की गई सृष्टि-निर्माण की प्रक्रिया की ओर देखने की एक स्वतंत्र दृष्टि थी, इसलिए डेईस्ट ईश्वर के अस्तित्व पर पक्का विश्वास रखने वाले होने के कारण उन्हें आस्तिक तो कहा जा सकता है, परंतु उनके द्वारा किसी विशिष्ट धर्म की परंपरा और कर्मकांड स्वीकार न किए जाने के कारण वे अन्य आस्तिकों से कुछ भिन्न थे। सभी आस्तिकवादी लोग ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास रखते हैं। इसके बावजूद जरूरी नहीं कि वे किसी विशेष धर्म की परंपरा और कर्मकांड पर भी विश्वास रखें, जो ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास रखते हैं, परंतु किसी भी धर्म के कर्मकांड पर विश्वास नहीं रखते, उन्हें डेईस्ट कहा जाता है। एक तरह से डेईस्ट धर्मनिरपेक्ष और शुद्ध आस्तिकतावादी थे। आज भी दुनिया में ऐसे काफी लोग हैं, जिनमें अनेक वैज्ञानिक, विचारक, लेखक और साधारण लोग भी सम्मिलित हैं। इस विचार को माननेवालों में एक प्रमुख विचारक थे थॉमस पेन, जो डेईस्ट थे। फुले के विचारों पर थॉमस पेन का प्रभाव बहुचर्चित है, थॉमस पेन की किताब ‘राइट ऑफ़ मैन’ पढ़कर वे अभिभूत हुए और उसकी बारीकियों को भारतीय सन्दर्भों में उन्होंने कहा कि ब्राह्मण लोगों ने थॉमस पेन की पुस्तक का आधार लेकर इस बात के लिए सबको तैयार किया कि हम सब लोग एक हुए बिना अमेरिकन, फ्रेंच और रूसी लोगों की बराबरी नहीं कर सकते। ‘मेरे बचपन में मैं भी इस तरह का पागलपन करता था, परंतु जब मैंने कुछ वर्षों बाद उसी पुस्तक का बारीकी से अध्ययन किया तब इन सुघरे हुए भटों की मतलबी चालों का वास्तविक अर्थ मुझे पता चला।’ भट-ब्राह्मण सोचते थे कि ब्रिटिशों को इस देश से हटा कर और अपना शासन हासिल करके शूद्रातिशूद्रों को हमेशा के लिए गुलाम बनाकर कैसे रखा जाए !

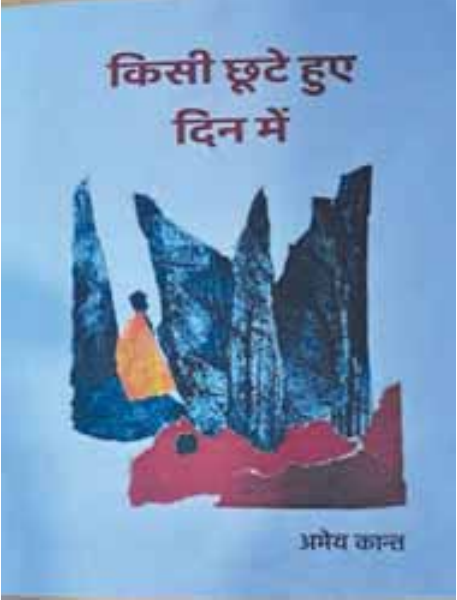
फुले का ब्रिटिश शासन के प्रति झुकाव अंधा नहीं था; वास्तव में,उनका दृष्टिकोण काफी आलोचनात्मक और योग्य था। जहाँ भी उन्हें ब्रिटिश सरकार में खामियाँ या कर्मियाँ नजर आईं, उन्होंने खुलकर उसकी आलोचना की, तब तक कि उन्हें भागने पर मजबूर होना पड़ा। निष्कासित करने की इच्छा भी की। उन्होंने उसी औपनिवेशिक शासन के तहत किसानों की दयनीय दुर्दशा को निर्दयतापूर्वक उजागर किया और लगभग उन्नीसवीं सदी के भारतीय उदारवादी राष्ट्रवादीयों की तर्ज पर उच्च करों और दुर्बल औद्योगिकीकरण के दोहरे बोझ के नीचे दबे किसानों की बिगड़ती स्थिति के लिए इसे जिम्मेदार ठहाराया।

# एक मिशनरी स्कूल में दाखिला मिल पाया और वे अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर सके ।

रहे हैं। पर सवाल यह है कि क्या सिर्फ याद करना ही काफी है? जवाब है—नहीं। हमें यह समझने की जरूरत है कि क्या फुले के सपनों का भारत बन पाया है?आंशिक रूप से इसे हाँ कहा जा सकता है, क्योंकि हमारे संविधान ने कानूनी स्तर पर दलितों, पिछड़ों और महिलाओं को समानता का व्यापक अधिकार दिया है। लेकिन, चुनौती यह है कि क्या इसका जमीनी स्तर पर सही मायने में क्रियान्वयन हुआ है?

आज भी भारत में शिक्षा और सामाजिक समानता के क्षेत्र में कई सकारात्मक बदलाव देखने को मिलते हैं, जैसे पढ़ाा का अधिकार कानून और बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाएँ। सरकारी आंकड़ों के अनुसार साक्षरता दर में वृद्धि हुई है और स्कूलों में लड़कियों की भागीदारी भी बढ़ी है। फिर भी, जमीनी सच्चाई यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी जातिगत भेदभाव, स्कूल ड्रॉपआउट और लैंगिक असमानता जैसी समस्याएँ मौजूद हैं। कई जगहों पर दलितों के साथ भेदभाव की खबरें सामने आती हैं, जो यह बताती हैं कि फुले के सपनों का भारत अभी अधूरा है। ऐसे में आवश्यकता है कि हम केवल उन्हें याद न करें, बल्कि उनके विचारों को अपने जीवन में उतारें। शिक्षा को केवल डिग्री नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाएँ। जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति तक समान अवसर और सम्मान नहीं पहुँचेगा, तब तक फुले की जयंती का उद्देश्य अधूरा ही रहेगा।

# किसी छूटे हुए दिन में



चीजों के बारे में। वर्णमाला में सिमटकर रहे दूसरे अक्षरों की तरह हो जाएगा दरकिनार यह भी एक दिन, भाषा से पूरी तरह गायब, जैसे छतों से गायब हो रही गौरैया,जैसे आदमी में से खुद गुम होता जा रहा है आदमी।

छोटे-छोटे बच्चों के पास पड़ोस के घरों में आवाजाही को लेकर रची कविता, ‘दूसरा घर’, एक बढ़िया कविता है, जिसमें कवि कहता है, बचपन इसी तरह दर्ज होता रहा, खुशबू की तरह कई घरों की स्मृतियों में। संकलन की एक और कविता प्रभावित करती है, ‘मंगल वाद्य’, जिसमें शहनाई बजाने वाले तीन लोगों की निजी जिंदगी के दुख-दर्द को शब्दों में पिरोकर एक मार्मिक कविता रची गई है। अपने-अपने दुखों को बिछकर, वे तीनों बैठ गए मंडप के पास और मंगल वाद्य बजा रहे हैं। दो औरतें कविता में अपनी ही धुन में, दुनिया जहान से बेखबर चलती, दो औरतों के बहाने कवि कहता है, कभी लगता है कि वे सच में चल रही हैं, और कभी जैसे वहीं ठहरी हुई हैं, समय के अनगिनत पन्नों पर एक पंक्ति की तरह

दोहराई जाती हुई।

शहर पर केंद्रित सात कविताओं में, कस्बे से शहर में तब्दील होते शहर को एक नई दृष्टि से कविताओं में उकेरा गया है। संकलन की विशेष उल्लेखनीय कविता, ‘इस समय जब’, में अपनी बेटी के बहाने इस कठिन समय में बेटीयाँ के साथ कथा को बहुत मार्मिक और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। कोरोना पर केंद्रित ‘कड़वे दिन ’, ‘कटा हुआ पेड़ ’, के अलावा, युद्ध और दंगों पर भी कविताएँ हैं, जैसे कि ‘Life is Beautiful ’, ‘युद्ध में स्त्रियाँ ’, ‘चीथड़े ’, ‘अधखुली खिड़कीं’ ये सभी संग्रह की अनूठी कविताएँ हैं ही,महक, प्रार्थना, बहुत चलने वाली चपलें, अकेला आदमी, चीजों का पता, बड़ी बात,स्पर्श भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बहरहाल अमेय कांत का यह दूसरा कविता संग्रह भी घटनाओं और संग्रहणीय है। लेखन शैली सहज और प्रवाहपूर्ण है, जिसमें कहीं भी बनावट या कृत्रिमता नहीं दिखती। हर पंक्ति में एक आत्मीयता है, जो पाठक को अंत तक बांधे रखती है।

## राजेन्द्र शर्मा

(लेखक कवि और कलाविद तथा पूर्व शासकीय अधिकारी हैं)



## संकट मोचन के दरबार में अनूप जलोटा ने लगायी 27वीं हाजिरी

श्रोता झूम उठे। इसके बाद मेरी झोपड़ी के भाग आज खुल जायेंगे, कौन कहता है कि भगवान आते नहीं, अच्युतम केशवम दामोदरम, दुनिया चले न राम के बिना, इतनी शकदिरम हमें देना दाता, नाम जप ले हरि का बंदे फिर पीछे पछतायेगा, हरी बोल हरी बोल गाते हुए श्रोताओं को नाचने के लिए बाध्य कर दिया। अनूप जलोटा की आवाज के साथ श्रोता मानो संगत कर उनका साथ दे रहे थे।

अपनी प्रस्तुति से आह्लादित भजन सम्राट अनूप जलोटा ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि संकट मोचन के दरबार में बिना नामा 27 साल से हाजिरी लगा रहा हूँ। संकट मोचन बाबा की मुझ पर इससे बड़ी कृपा और क्या हो सकती है। इस दरबार में शास्त्रीय संगीत के देवतुल्यम कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते रहे हैं। इस दृष्टि से देखता हूँ तो भले ही मैं 27 सालों से संकट मोचन के दरबार में अपनी हाजिरी लगा रहा हूँ, परन्तु इस मंच के लायक मैं बिल्कुल नहीं हूँ, बस मुझ पर हनुमान जी की कृपा है, वह बुलाते हैं और मैं चला आता हूँ।



भजन सम्राट यहीं नहीं रुके। उन्होंने कहा कि संकट मोचन संगीत समारोह शास्त्रीय संगीत के कलाकारों के लिए इतना बड़ा और पवित्र मंच है कि नया वर्ष आने पर सबसे पहले हनुमान जयन्ती पर होने वाले इस समारोह का ध्यान दिलोदिमाग में आता है। कलाकार हो या श्रोता, किसी की हैसियत नहीं कि वह कह सके कि वह संकट मोचन संगीत समारोह में जायेगा ही, यहां वो ही आ पाता है, जिसे संकट मोचन बाबा बुलाते हैं।

16 साल की उम्र से भजन गा रहे अनूप जलोटा अपने भजनों के लिए अनेक विश्व में जाने जाते हैं और वर्ष भर दुनिया भर में भजन गायन का कार्यक्रम करते हैं। अनूप इसका श्रेय भी संकट मोचन को देते हुए कहते हैं कि मैं रोजाना छह-सात घंटे रियाज करता हूँ। मेरा मानना है कि हल्की आवाज में रियाज करना चाहिए, इससे गला थकता नहीं है और आवाज पालिश होती रहती है। यहां संकट मोचन बाबा के दरबार में अपनी हाजिरी लगाकर यह सब साल भर कर आराम से कर सकूँ, इसके लिए मानसिक स्तर पर साल भर के लिए हाजिरी लगाकर अपनी बैटरी को चार्ज कर लेता हूँ।

## इंदिरा वार्ड निवासी से एक लाख बीस हजार 6 रुपये की धोखाधड़ी, पुलिस ने किया मामला दर्ज

सोहागपुर। जरा सी चूक से आजकल धोखाधड़ी की वारदातें देश भर में आम बात हो गई हैं। इसलिए समय समय सरकार नागरिकों को आगाह करते रहती हैं कि कोई भी ओटीपी या अन्य संदिग्ध परिस्थितियों से बचे। सतर्कता बरते। फिर आम आदमी निरंतर धोखाधड़ी का शिकार होते रहते हैं। ऐसा ही वाकिया आज सोहागपुर पुलिस ने दर्ज किया है। इस संबंध में पुलिस ने बताया कि सोहागपुर इंदिरा वार्ड निवासी फरियादी शेख शादाब पिता शेख युसूफ ने इस आशय की प्राथमिकी अज्ञात आरोपी के खिलाफ दर्ज कराई है। कि वह कार इंश्योरेंस का काम करता है। दिनांक 31.3.26 को मधुर कोरियर सोहागपुर से एक बंद लिफाफा गाड़ी का एग्जिमेंट के दस्तावेज वास्तु फाइनेंस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड कंपनी को भेजा था। जो दिनांक 6.4.26 तक कोरियर वास्तु फाइनेंस कंपनी इंदौर नहीं पहुंचा। तब वास्तु कंपनी के कर्मचारी को फोन कर बताया कि सूखरे द्वारा भेजा गया पार्सल अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। आर्डर ट्रैक करने के लिए गूगल पर मधुर कोरियर कंपनी के नंबर को सर्च किया। गूगल पर नंबर दिखा

जिसे कॉल किया। कॉल पर कहा गया डाक बांटेने वाले का नंबर दे रहा हूँ। उसमें 2 भेज दो। इस व्यक्ति को 2 ट्रांसफर किए। कुछ देर बाद खाते से क्रमशः रुपए निकलते रहे। ऐसे में लगभग 1 लाख 20 बीस हजार, 6 रुपए कट गए। बाद में फरियादी को ऐसा लगा कि उसके साथ साइबर फ्रॉड धोखाधड़ी हो गई है। फरियादी ने साइबर हेल्पलाइन 1930 पर भी शिकायत दर्ज कराई है। रिपोर्ट के आधार पर अज्ञात आरोपी के विरुद्ध धारा 318(4) 319(2) बीएनएस धोखाधड़ी करने का मामला दर्ज करके विवेचना में लिया गया है। नगर निरीक्षक राहुल रायकवार एवं एएसआई गणेश राय ने नागरिकों को आगाह किया है कि पुलिस के द्वारा समय-समय पर साइबर फ्रॉड से बचने के लिए प्रचार प्रसार किया जाता है। गूगल पर कोई भी सर्च किया गया नंबर अथवा विज्ञापन आदि की सत्यता को पहले परख लें। उसके बाद ही पैसों का आदान-प्रदान करें। सावधान रहें, सुरक्षित रहें।

## सहयोग एवं सुरक्षा को मजबूत करके पुलिस की मदद करें : नगर निरीक्षक

सोहागपुर। नवीन थाना परिसर में नगर निरीक्षक राहुल रायकवार, उप निरीक्षक एस. एस. अली, मुकेश सोनी, एएसआई गणेश राय आदि के साथिये थाना सोहागपुर स्तर पर ग्राम रक्षा समितिकी बैठक संपन्न हुई। इसके पूर्व नगर रक्षा समिति का गठन किया गया। इसी संदर्भ में नवीन थाना



परिसर में बैठक आयोजित की गई। नगर एवं ग्राम रक्षा समिति के सदस्यों को नगर निरीक्षक राहुल रायकवार के कहां कि आप सभी अपने कार्य के अतिरिक्त पुलिस की मदद कर रहे हैं।

आपको साधुवाद। श्री रायकवार ने बैठक को संबोधित करते कहा कि समिति सदस्य नगर सुरक्षा को मजबूत करके पुलिस की मदद करें। जिससे अपराधों पर अंकुश लगकर सांप्रदायिक सौहार्द संपत्ति की सुरक्षा हो सके। समिति सदस्य संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखे। मुख्य कार्य सुरक्षा, गस्त, पुलिस की सहायता, अपराध नियंत्रण, शांति व्यवस्था एवं आपदा प्रबंधन है। आपने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि समय-समय पर थाना क्षेत्र में होने वाले त्योहारों पर्वों पर सहयोग लिया जाए। समिति सदस्यों ने में उसाह बैठक उपस्थिति दर्ज कराई। बैठक में मकसूद खान, आरक्षक मनोहर दायमा सहित नगर सुरक्षा समिति के सदस्य उपस्थित थे।

## कार्डियो पल्मोनरी रिससिटेशन का प्रशिक्षण



सोहागपुर। पुलिस एवं स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आपातकालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए दुर्घटना आदि की स्थिति में जीवन रक्षा के तौर पर दी जाने वाली सीपीआर (कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन)का प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सोहागपुर में प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉक्टर अरुण यादव एवं डॉ. नेहा वर्मा ने उपस्थित जनों को आकस्मिक उपचार की महत्वपूर्ण बातों को साझा करते बताया कि जब किसी व्यक्ति का दिल धड़कना बंद कर दे या सांस रुक जाए। जिससे ऑक्सीजन का संचार हो सके इस हेतु आमजनों को जागरूक करने के लिए समय-समय पर सीपीआर का प्रशिक्षण पुलिस विभाग, स्वास्थ्य विभाग के सहयोग के साथ आयोजित करता है। इसी तारतम्य में सीपीआर का कार्यक्रम थाना क्षेत्र के दो स्थानों पर आयोजित किया गया जिसमें डॉक्टरों मरीज को किस तरह से प्रारंभिक तौर पर चिकित्सालय पहुंचने तक जीवन रक्षक प्रणाली बताई। जिसमें एक मिनट में दो बार कमर को सीधा करके हथों से मरीज की छाती को दबाना पड़ता है। वहीं मरीज की पल्स भी चेक करें। इस अवसर पर पुलिस अधिकारी भी उपस्थित थे।

## पी.एम. मित्र पार्क एवं पीथमपुर की विख्यात छवि के कारण उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा मध्यप्रदेश से निवेश आकर्षण एवं अन्य चीजों को समझने हेतु दल भेजा

56000 एकड़ में विकसित हो रहे बुंदेलखण्ड औद्योगिक विकास प्राधिकरण के अधिकारियों द्वारा मध्यप्रदेश का दौरा किया



धारा। अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं रोजनल स्तर पर रोड शो एवं ग्लोबल तथा रोजनल इंडस्ट्री कॉन्फ्लेक्स के माध्यम से प्रदेश में निवेश आकर्षित करने के मध्यप्रदेश मॉडल की देश भर में सराहना हो रही है। 56000 एकड़ में विकसित हो रहे बुंदेलखण्ड



डेलिगेशन द्वारा कार्यकारी संचालक, एम.पी.आई.डी.सी., क्षेत्रीय कार्यालय, इन्दौर हिमांशु प्रजापति से 9 अप्रैल को मुलाकात की, जहाँ पर उनके द्वारा पी.एम. मित्र पार्क एवं अन्य औद्योगिक परियोजनाओं पर प्रस्तुति दी गई तथा

मध्यप्रदेश को निवेशकों की पहली प्राथमिकता बनाए जाने के संबंध में शासन स्तर से किए जा रहे विभिन्न प्रयासों, निवेश प्रोत्साहन पॉलिसी, अधोसंरचनाओं की गुणवत्ता तथा प्लानिंग के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

## डेलिगेशन के सदस्य मध्यप्रदेश मॉडल से काफी प्रभावित हुए एवं इसे अपने क्षेत्र में लागू करेंगे

दल द्वारा यह बताया गया कि इन्दौर क्षेत्र के पी.एम. मित्र पार्क एवं पीथमपुर की विख्यात छवि के कारण उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा उन्हें मध्यप्रदेश से निवेश आकर्षण एवं अन्य चीजों को समझने हेतु भेजा गया है। दल द्वारा स्मार्ट इण्डस्ट्रीयल पार्क एवं मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक पार्क का भी भ्रमण किया गया एवं इस संबंध में बारिकी से जानकारी प्राप्त की गई। इसी प्रकार 10 अप्रैल को दल के द्वारा पी.एम. मित्र पार्क का दौरा किया गया, जहाँ पर दोनों राज्यों की टेक्निकल टीम ने साथ बैठकर परियोजना का बारिकी से अध्ययन किया। जिसमें कि ले-आउट प्लानिंग, क्रॉस सेक्शन, डी.पी.आर. आदि शामिल थे। डेलिगेशन के सदस्य मध्यप्रदेश मॉडल से काफी प्रभावित हुए एवं इसे अपने क्षेत्र में लागू करेंगे।

## जिले को मिला है 15 हजार बालिकाओं के टीकाकरण का लक्ष्य, अब तक 80 प्रतिशत पूरा

40 दिन में 11876 बालिकाओं का हो चुका है एचपीवी टीकाकरण

बैतूल। बालिकाओं को सर्वाङ्कल कैंसर से बचाने के लिए एचपीवी टीकाकरण किया जा रहा है। यह अभियान 28 फरवरी से शुरू हुआ था। अभियान के 40 दिन पूरे हो चुके हैं। इस दौरान बैतूल जिले में करीब 11,876 से अधिक किशोरियों (बालिकाओं) का टीकाकरण हो चुका है, जो कि कुल लक्ष्य का 80 फीसदी है। वैसे जिले को 15 हजार टीकाकरण का लक्ष्य मिला है। बताया जा रहा है कि जिले को 15 हजार वैक्सिन डोज मिले थे। जिसमें से 11876 डोज लगाये जा चुके हैं, शेष डोज का स्टॉक रखा हुआ है, इस बचे हुए डोज से लक्ष्य को पूरा किया जाएगा।

स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक अभियान में आंगनवाड़ी, शिक्षा विभाग और फील्ड स्टाफ की सक्रिय भूमिका रही है। चिकित्सकों का कहना है कि सर्वाङ्कल कैंसर किसी भी उम्र में हो सकता है, लेकिन 30 साल के बाद इसके होने की संभावना अधिक बढ़ जाती है। किशोर अवस्था में ही एचपीवी वैक्सिन लगावा लेने से जोखिम काफी कम हो जाता है। यह टीका प्रतिरक्षा प्रणाली को एंटीबॉडी बनाने के लिए प्रेरित करता है। जो वायरस से लड़कर संक्रमण को फैलने से रोकते हैं।

घोडाडोंगरी ब्लॉक में सबसे अधिक टीकाकरण- एचपीवी टीकाकरण को लेकर सबसे बेहतर स्थिति घोडाडोंगरी ब्लॉक की है। यहां टीकाकरण के लिए 138 सत्र आयोजित किये गये। जिसमें 1699 बालिकाओं का टीकाकरण हुआ। वहीं दूसरी तरफ बैतूल बाजार क्षेत्र में सबसे कम टीकाकरण हुआ है। यहां 56 सत्र आयोजित किये गये थे, जिसमें मात्र 477 बालिकाओं का टीकाकरण हुआ। दूसरे नंबर पर आमला ब्लॉक है। यहां टीकाकरण के 87 सत्र आयोजित किये गये।

जिसमें 1487 बालिकाओं को टीके लगाये गये हैं। जिला टीकाकरण अधिकारी प्रांजल उपाध्याय ने बताया कि टीकाकरण को लेकर बैतूल जिला प्रदेश में 11-12वें स्थान पर है।

800 के आसपास डोज स्टॉक में उपलब्ध- जिले को एचपीवी टीकाकरण के लिए 15 हजार डोज मिले थे। जिसमें से जिले के सभी ब्लॉक को टीकाकरण के लिए डोज भेज दिये गये हैं। अभी 800 के आसपास डोज बफर स्टॉक के



लिए रखा गया है। जिस ब्लॉक में डोज खत्म हो जायेगे, उन्हें स्टॉक में रखा हुआ डोज उपलब्ध कराया जायेगा। जिला टीकाकरण अधिकारी प्रांजल उपाध्याय ने बताया कि एचपीवी टीकाकरण के लिए लगातार सत्र आयोजित किये जा रहे हैं। जो डोज शेष बचे है, यह डोज आने वाले समय में बालिकाओं को लगाये जायेगे। उम्मीद है कि जिला जल्द ही 15 हजार के लक्ष्य को हासिल कर लेगा।

अफवाहों के बावजूद 80 फीसदी टीकाकरण बड़ी उपलब्धि- केंद्र सरकार द्वारा सर्वाङ्कल कैंसर की रोकथाम करने निःशुल्क लगाए जा रहे एचपीवी वैक्सिन को लेकर अफवाहों के बीच आदिवासी बहुल बैतूल जिले में 80 फीसदी वैक्सिनेशन पूर्ण हो गया है। बताया जा रहा है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ)

द्वारा करवाए गए कई मेटाएनालिसिस और स्टडी में यह सामने आया है कि एचपीवी वैक्सिन लगवाने के बाद सर्वाङ्कल कैंसर से 85 से 90 फीसदी तक बचाव होता है। महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर के बाद दूसरा सर्वाङ्कल कैंसर सर्वाङ्कल कैंसर होता है। सर्वाङ्कल कैंसर से बचने 14 से 15 वर्ष के बीच की बालिकाओं को यदि एचपीवी वैक्सिन लग जाए तो वैक्सिन लगवाने वाली बालिकाओं को भविष्य में सर्वाङ्कल कैंसर होने की संभावना 85 से 90 फीसदी तक कम हो जाती है।

जिले में एचपीवी टीकाकरण की ब्लाकवार स्थिति, ब्लाक आयोजित सत्र टीकाकरण

आमला	87	1487
आठनेर	211	864
बैतूल	119	1397
बै.बा.	56	477
भैंसदेही	36	1154
भीमपुर	65	1278
चिचौली	32	932
घोडाडोंगरी	138	1699
मुलताई	42	1000
प्रभातपट्टन	69	868
शाहपुर	59	720
टोटल	914	11876

इनका कहना है -

जिले में अभी तक 80 फीसदी तक वैक्सिनेशन हो चुका है। यह वैक्सिन सर्वाङ्कल कैंसर से बचाने के लिए पूरी तरह से कारगर है। इस वैक्सिन से किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं है।

- प्रांजल उपाध्याय, जिला टीकाकरण अधिकारी, बैतूल

## गेहूं खरीदी घोषणा केवल दिखावा, छोटे किसान परेशान: ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष सुधीर ठाकुर

सोहागपुर। प्रदेश शासन भले ही छोटे किसानों से गेहूं खरीदी करने की घोषणा कर दी है। लेकिन सोहागपुर विधानसभा मुख्यालय के समीपवर्ती ग्राम करनपुर आदि में गेहूं खरीदी छोटे किसानों के लिए अभिशाप बनकर खड़ी है। इस संबंध में विगत दिवस जिला मुख्यालय नर्मदापुरम में जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में कलेक्टर कार्यालय नर्मदापुरम का घेराव किया गया था। लेकिन इसका परिणाम धरातल पर नहीं उतरा है। इस संबंध में ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष सुधीर ठाकुर ने इस प्रतिनिधि को बताया कि सरकार ने 10 अप्रैल से एक से पांच एकड़ जमीन वाले किसानों से गेहूं खरीदी की घोषणा की थी। बचेरे छोटे छोटे किसानों ने ट्रेक्टर ट्रालियों को किराए लेकर वॉल्यूम स्थापन तक गेहूं खरीदी केन्द्रों पर लेकर आए। लेकिन वहां न तो कोई सौसायटी का कर्मचारी मिला, न तोल कांटा, न डायलाना दिखा। चूकि ट्रेक्टर ट्रालियों का एक दिन का किराया दो से ढाई हजार रुपए होता है। ऐसे में छोटे किसान क्या करता इसी आशा में गेहूं सोहागपुर के समीपवर्ती ग्राम करनपुर स्थित मधुवन



वेयरहाउस में जिसकी खरीदी आदिम जाति सेवा सहकारी समिति टेकापार को गेहूं उपाजर्जन का कार्य कर रही है। वहां किसानों का अनाज पड़ा हुआ है। आज दिनांक तक यहां

कोई समिति का कर्मचारी नहीं है। और न ही गेहूं खरीदी का कार्य शुरू हुआ है। सहकारी समिति खपरिया तहसील सोहागपुर एवं समिति करणपुर आदि हैं। श्री ठाकुर ने आगे

बताया कि यदि सरकार कोई घोषणा नहीं करती तब किसान अपनी फसल घर पर सुरक्षित रखता। लेकिन अब फसल उम्मीद के साथ वेयरहाउस तक पहुंच गई। ऐसे में कोई समिति वाले नहीं हैं। वहीं मौसम भी कर्कट ले रहा है। जिसमें बरसात होने की संभावना प्रबल है। आखिर इस होने वाली किसानों की संभावना की हर पाई कौन करेगा। यह बड़ा सवाल जनता-जनार्दन को खाए जा रहा है। आपने नवीनयुक्त कलेक्टर से मामले में संज्ञान लेने का आग्रह किया है। तथा किसानों की जनभावनाओं को निर्णय लेने की गुंजायिश की है। इधर ग्राम किवलारी के किसान राम हजूर पटेल ने भी आरोप लगाया है कि सोहागपुर के किवलारी के समीपवर्ती एक वेयरहाउस में जब मैं अपनी गेहूं को फसल करवा गया तो वेयरहाउस में बाहर से ताला लगा हुआ था। श्री पटेल ने वेयरहाउस एवं ट्रेक्टर ट्रालियों के फोटो एवं वीडियो सोशल मीडिया पर डाल दिए हैं। कुछ मिलकर सरकार किसानों को पलीता लगाने की ओर बढ़ रही है। चित्र ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष सुधीर ठाकुर ने उपलब्ध कराए हैं।

# अमेरिका-ईरान में युद्ध विराम: ट्रंप रजामंद ना होते तो क्या करते ?

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।



अंततः महाविनाश की आशंकाओं और दोनों गोलाडों में धुकधुकी के बीच अमेरिका और ईरान के बीच युद्धविराम हो गया। लेकिन सच यह है कि अमेरिका और ईरान के दरमियां जंग चौदह दिनों के लिए टली है, खत्म नहीं हुई है। इसकी झलक अमेरिका और इस्रायल के साझा आक्रमण के शिकार हुए ईरान के उस दस सूत्री प्रस्ताव में मिलती है, जिस पर अमेरिका के बड़बोले और दंभी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने तब रजामंदी जाहिर की, जब ईरान को पाषाण युग में पहुँचा देने की उनकी मोहलत में कुछ ही घंटे शेष थे। उनकी धमकी ने यह उजागर कर दिया था कि उनका लोकतंत्र के महाबली राष्ट्र के मुखिया होने के बावजूद ट्रंप के मन में मानव जीवन, सभ्यता और संस्कृति के प्रति कोई सम्मान शेष नहीं है और वह अपनी जिद या खब्त में कुछ भी दांव पर लगा सकते हैं।

करीब 40 दिन चली जंग के घटनाक्रम पर गौर करें तो 28 फरवरी के शुरुआती दौर में अयातुल्लाह खामनेई और अली लारीजानी की मृत्यु के बाद कुछ भी अमेरिकी मंशा के अनुरूप नहीं हुआ। ईरान में कूदे-ता खामखाली रहा और पेजेशिक्यान, अरघाची और गालीबफ के सम्मिलित नेतृत्व में ईरान ने अमेरिका और इस्रायल से बखुबी पंजा लड़ाया और घुटने टेकने के बजाय करारे प्रत्यक्रमण से उनकी व्यूह-रचना के अंज-पंजर ढीले कर दिए। इससे वियतनाम और अफगानिस्तान की भांति ईरान भी अमेरिकी गरूर चकनाचूर करने वालों की गवौली और विरल पात में खड़ा हो गया। ईरान ने इस्रायल का आयरन डोम ही नहीं भेदा, बल्कि दियोगोमार्सिया तक प्रहार कर अमेरिका की पेशानी पर पसीना ला दिया। ईरान के कामयाबी से किला लड़ाने का नतीजा यह हुआ कि ट्रंप को अपने पांव पीछे खींचने पड़े। अमेरिका में उनका विरोध



दिनोंदिन सघन होता जा रहा था और उन्हें सबसे निकट या बदतर राष्ट्रपति की संज्ञा दी जा रही थी, तथा उनके खिलाफ अविश्वास या महाभियोग की संभावना उठ खड़ी हुई थी। ब्रिटेन, स्पेन, जर्मनी और फ्रांस जैसे देशों ने उनसे किनारा कर लिया था और नाटो में दरारें उभर

आई थीं। स्वयं अमेरिका ने अपने अनेक कीमती विमान गंवाए। युद्ध का लंबा और खचीला होना उसके लिए घाटे का सौदा था। दूसरे, यूएई, सऊदी अरब, कतर, बहरीन, ओमान आदि देश सुरक्षा के लिए उस पर अपना भरोसा गंवा चुके थे। यद्यपि अभी भी अमेरिका इस्रायल के अलावा किसी भी अरब या खाड़ी देश का सगा नहीं है, किन्तु यह एहसास लगातार गहरा हो रहा था कि ट्रंप ने 'बिबी' के उरसावे में आकर भूल-गलती की। ऐसे में अशिष्टता की हदों को लांघ चुके ट्रंप के सामने और कोई चारा नहीं था कि वह युद्धविराम पर राजी हों। देश-दुनिया में ट्रंप और अमेरिका की ऐसी भद्

जंग से कुछ घंटे पूर्व नसेट में सम्मानित मोदी का इस्रायल को फादरलैंड कहना और जयशंकर का मध्यस्थता को दलाली बताना अनीचिल्यपूर्ण था। बहरहाल, युद्धविराम के बावजूद इस्रायल की दक्षिण लेबनान में बमबारी दशांती है कि तेल अवीव ने ग्रेटर इस्रायल की मुहिम त्यागी नहीं है। यकीनन उसे अपनी रणनीति नये सिरे से बनानी होगी। जंग के फलस्वरूप हेरमुज जलडमरूमध्य के रूप में ईरान को ब्लैक चेक मिल गया है। वह हेरमुज पर नियंत्रण तो रखेगा ही, हर जहाज से दो मिलियन डॉलर चुगी भी वसूलेगा। यह सन 1956 के स्वेज प्रसंग की याद दिलाता है। यह जंग नव-उपनिवेशवादी अमेरिका के वर्चस्व के क्रमिक अंत और मॉस्को-बीजिंग-तेहरान धुरी की मजबूती की शुरुआत है।

करीब डेढ़ करोड़ इरानियों का शहादत के लिए पंजीयन, लाखों इरानियों का मानव श्रृंखला बनावत और इरानी सिने-निर्माता जफर पनाही का युद्ध की वनोटों के बीच वतन लौटना मानीखेज घटनाएं हैं। बारूदी धुं और धमाकों के बीच अली घनसारी का तार पर छेड़ा अमन का राग सदियों तक फिजाओं में गुंजाता रहेगा—अलबत्ता आइए हम दुआ करें कि युद्धविराम से शांति का मार्ग प्रशस्त होगा।

## योग से मिलता है शारीरिक

### मानसिक और आध्यात्मिक लाभ

भोपाल। योग से व्यक्ति को शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक लाभ मिलता है। योग विद्या की शुरुआत सृष्टि के आरंभ से ही हो गई थी। हिरण्यगर्भ महाराज ने महर्षि अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को योग विद्या का ज्ञान दिया। इन ऋषियों ने महर्षि पतंजलि को यह विद्या प्रदान की और योग दर्शन प्रकाश में आया।



भारतीय योग संस्थान के पश्चिम जिला भोपाल के तत्वावधान में सलैया स्थित बीडीए पार्क केंद्र में संपन्न साठवें स्थापना दिवस कार्यक्रम में अपने उद्घोषण में वरिष्ठ साहित्यकार श्रीराम माहेश्वरी ने यह बात कही। वे मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने अष्टांग योग के आठ अंगों तथा योग सिद्धि पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ साधक आरबी खरे ने योग से होने वाले लाभ बताए। उन्होंने चंद्रभेदी और उज्जयी प्राणायाम पर मार्गदर्शन किया। आरंभ में अतिथियों ने मंत्र संस्वती के चित्र पर माल्यार्पण किया तथा दीप प्रज्वलित किया। महिला साधकों द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। श्रीमती नैना शर्मा एवं सावित्री शर्मा द्वारा योगाभ्यास करवाया गया। केंद्र प्रमुख भागवत गुप्ता ने संस्थान और योग मंजरी का परिचय दिया। उन्होंने बताया कि दस अप्रैल 1967 को योग संस्थान की स्थापना हुई थी। अब तक चार हजार पांच सौ से अधिक इसकी शाखाएं हो चुकी हैं। एस पी गुप्ता ने श्रीराम माहेश्वरी को योग मंजरी पत्रिका भेंट की। अंत में विलास आफले ने आभार व्यक्त किया।

### डॉ. महाडिक को मध्यप्रदेश गौरव पुरस्कार

भोपाल। उज्जैन, मध्य प्रदेश के प्रतिष्ठित चिकित्सक एवं बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. विजय महाडिक को मध्यप्रदेश गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया डॉ. महाडिक पिछले 50 से अधिक वर्षों से गरीब और वंचित लोगों को सहज, सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।



1974 से अब तक उन्होंने 45 लाख से अधिक मरीजों का उपचार किया है तथा एक लाख से अधिक क्षय (टीबी) रोगियों का निःशुल्क इलाज किया है। उन्होंने मध्य प्रदेश में धर्मांध स्वास्थ्य संस्थानों की स्थापना, चिकित्सा शिक्षा में सुधार और जनस्वास्थ्य नीतियों में महत्वपूर्ण बदलाव की पहल की।

जनस्वास्थ्य, ग्रामीण सशक्तिकरण और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में उनकी असाधारण सेवा निःस्वार्थ राष्ट्रसेवा के लिए GRIPS फाउंडेशन द्वारा आयोजित एक अत्यंत गरिमामय सम्मान समारोह में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री मनोज श्रीवास्तव, विद्या भारती के अखिल भारतीय अध्यक्ष डॉक्टर रविंद्र कान्हेरे, सदुर्ग नागरिक सहकारी बैंक के अध्यक्ष वरिष्ठ अधिकारिता विलास बुचके, सदुर्ग सेवा मंडळ की अध्यक्ष श्रीमती रोहिणी शिगवेकर, वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. अभिजीत देशमुख मध्यप्रदेश मराठा समाज के अध्यक्ष वरिष्ठ वास्तुविद प्रवीण जगताप के साथ डॉ. महाडिक को मध्यप्रदेश गौरव तथा मराठी गौरव सम्मान से सम्मानित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उन्हे सम्मानित कर हमारा सम्मान बढ़ा है। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भोपाल में विविध क्षेत्र में कार्यरत प्रतिष्ठित और प्रभावशाली जन उपस्थित थे।

## अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के पूर्व

### 100 दिवसीय निःशुल्क लाइव योग सत्र का होगा आयोजन

बैतूल। 12वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2026 के पूर्व देशभर में जन भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 100 दिवसीय निःशुल्क लाइव योग सत्र कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, आयुष मंत्रालय द्वारा संचालित किया जाएगा। जिला आयुष अधिकारी बैतूल डॉ. योगेश चौकीकर ने बताया कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य योग को जन-आंदोलन के रूप में स्थापित करना तथा आमजन के दैनिक जीवन में योग को शामिल करना है। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिभागियों के लिए 14 दिवसीय संरचित योग सत्र आयोजित किए जाएंगे, जिनका प्रसारण ऑनलाइन माध्यम से किया जाएगा। कार्यक्रम का समापन 27 मई 2026 को एक भव्य ऑनलाइन योग कार्यक्रम के साथ किया जाना प्रस्तावित है। उन्होंने विभागीय अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों सहित समस्त नागरिकों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में इन योग सत्रों में भाग लें।

## एमसीयू में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान आयोजित

# मीडिया इंडस्ट्री और अकादमिक जगत में विमर्श जरूरी: अच्युतानंदजी

भोपाल। आजादी से पहले और बाद की पत्रकारिता के मूल्यों में व्यापक बदलाव आए हैं। आज पत्रकारिता में लोकहित की तुलना में महत्वाकांक्षाएँ हावी हैं। पूर्व की पत्रकारिता में नैतिक स्तर उच्च कोटि का था। वह दौर और उस दौर के लोग अद्भुत थे। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी ने उसी दौरान देश की राजनीति, साहित्य, संस्कृति और सभ्यता को अपनी तेजस्वी पत्रकारिता से ऊपर उठाने का काम किया। वे केवल एक पत्रकार ही नहीं बल्कि एक योद्धा और विलक्षण संत थे। एक ऐसे योद्धा संपादक जिन्हें सब प्यार करते थे और जिनकी बातें भी सब मानते थे। उक्त बात वरिष्ठ पत्रकार और संपादक तथा एमसीयू के पूर्व कुलगुरु अच्युतानंद मिश्र ने कही। वे माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान में बतौर अतिथि वक्ता बोल रहे थे।

उन्होंने बताया कि उस दौर का कोई ऐसा बड़ा नेता साहित्यकार और पत्रकार नहीं होगा जो उनसे मिलने उनके छोटे से गाँव बाबई और कर्मस्थली खंडवा न गया हो। उनके अनुसार माखनलालजी ने स्वयं तो आदर्श-पत्रकारिता की ही बल्कि उस समय के कई पत्रकार-संपादकों ने भी उनकी प्रेरणा और सानिध्य से देश की राजनीति, भाषा और साहित्य के उत्थान का काम किया। उन्होंने चतुर्वेदीजी के समकालीन माधवराव सप्रे,



महावीर प्रसाद द्विवेदी, कल्याण पत्रिका के संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार का भी सम्मान से जिक्र किया और सभागार में उपस्थित नवागत पत्रकारों को उनके बारे में पढ़ने व प्रेरणा लेने के लिए कहा।

'पुष्प की अभिलाषा' कविता का मर्म समझने का आग्रह करते हुए भावुकता से कहा कि सोचिए उस कल्पना के बारे में जो उस पथ पर फेंक देने का आग्रह करती है जहाँ वीर सैनिक मातृभूमि पर अपना शीश चढ़ाने जा रहे हैं आज वह कविता इसीलिए कालजयी

है क्योंकि देशके प्रति गहन भाव से उपजी है। 'कल्याण' पत्रिका का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि आज भी वह पत्रिका बिना विज्ञापन और पुस्तक समीक्षा के निकलती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात लेखक एवं विचारक मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि माखनलालजी ने पत्रकारिता की विद्यापीठ की परिकल्पना की थी। जिस दौर में पत्रकारिता को शस्त्र की तरह इस्तेमाल किया जाने लगा था उस समय उन्होंने उसे शास्त्र माना

और इस बात पर जोर दिया कि पत्रकारिता पढ़ने और पढ़ाने की सख्त जरूरत है। वे उस युग के प्रखर और दमदार पत्रकार बने जब अखबार छपना ही देशदोह माना जाता था। भारत की भाषा, चिंतन और अस्मिता को लेकर वे सजग थे। तिलक और गांधी की दो धाराओं से गुजरते हुए हमें माखनलाल जी को समझना होगा। उन्होंने तिलक से तेज, ओज और आक्रामकता ली जबकि गांधी से विनम्रता, नैतिकता और सौजन्यता ग्रहण की। वे इन दोनों धाराओं के संगम पर खड़े थे। मनोज जी ने कहा कि शब्द जब सत्य से उत्पन्न होता है तब वह तोप से भी ज्यादा अस्पर्कारी होता है।

आरंभ में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वागत उद्घोषण दिया और मिश्र जी के सम्मान में कहा कि आज जिस परिसर में हम बैठे हैं उसका सपना जिन अँकों ने देखा था वे आज हमारे बीच हैं। मिश्र जी की इस विश्वविद्यालय के विकास में अहम भूमिका है।

इस अवसर पर पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थियों द्वारा तैयार विकल्प समाचार पत्र का विमोचन भी हुआ। सीएसआर के तहत एएपी आनलाइन ने विश्वविद्यालय को एक ई-रिक्शा भेंट किया। इसका शुभारंभ भी अतिथियों ने किया। आभार कुलसचिव पी. शशिकला ने माना और सुंदर संचालन संस्कृतिकर्मी विनय उपाध्याय ने किया।

## भूतपूर्व सैनिकों की मासिक बैठक 13 अप्रैल को

बैतूल। भूतपूर्व सैनिकों की मासिक बैठक 13 अप्रैल को प्रातः 11.30 बजे से जिला सैनिक कल्याण कार्यालय में आयोजित की जाएगी। कैप्टन आईएन सुमीत सिंह सेवानिवृत्ति जिला सैनिक कल्याण अधिकारी ने बताया कि बैठक के दौरान हार्टफुलनेस मॉडिशन का आयोजन भी किया जाएगा। उन्होंने सभी भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके परिजनों से बैठक में उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

## सौरभ संजय सोनवाने बैतूल के नए कलेक्टर

बैतूल। जिले में दो साल से पदस्थ कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी का रिवा तबादला कर दिया है। गुरुवार देर रात जारी प्रशासनिक अधिकारियों की तबादला सूची में सूर्यवंशी को रिवा कलेक्टर बनाया गया है। उनके स्थान पर रिवा के निगम आयुक्त रहे सौरभ संजय सोनवाने को बैतूल कलेक्टर नियुक्त किया गया है। 2017 बैच के आईएस अधिकारी सोनवाने ने तीसरे प्रयास में संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की परीक्षा उत्तीर्ण कर 2017 बैच के आईएस अधिकारी बने। वहीं, निवर्तमान कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी का कार्यकाल भी उल्लेखनीय रहा। 2012 बैच के आईएस अधिकारी सूर्यवंशी जनवरी 2024 से अप्रैल 2026 तक बैतूल कलेक्टर रहे और वर्तमान में रिवा कलेक्टर के रूप में पदस्थ हैं। वे



रतलाम कलेक्टर भी रह चुके हैं और एक सख्त व सक्रिय अधिकारी के रूप में पहचाने जाते हैं। बैतूल में उनके कार्यकाल के दौरान आदि कमयोगी अभियान और जल संचय-जन भागीदारी जैसे प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। वहीं राज्य स्तर पर टीबी उन्मूलन,

निर्वाचन कार्यों और प्रशासनिक डिजिटाइजेशन में बेहतर कार्य के लिए जिले को सम्मान और सराहना प्राप्त हुई। साथ ही, वे भू-माफियाओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई और देर रात निरीक्षण जैसे सक्रिय कार्यशैली के लिए भी चर्चा में रहे।

## भाजपा प्रदेश प्रवक्ता बनने पर विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे का सारणी में भव्य स्वागत



बैतूल। आमला-सारणी के लोकप्रिय विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे के भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता नियुक्त होने पर सारणी मंडल में उनका भव्य स्वागत किया गया। उनके प्रथम आगमन पर कार्यकर्ताओं ने ढोल-नगाड़ों और पटाखों के साथ पुष्प वर्षा कर जोरदार अभिनंदन किया। मंडल कार्यालय में उत्साहपूर्ण माहौल के बीच कार्यक्रमीओं ने नारेबाजी करते हुए खुशी जाहिर की। कार्यक्रम की शुरुआत मां भारती, पंडित दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के छायाचित्र पर दीप प्रज्वलन कर की गई। इस अवसर पर विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, मंडल प्रभारी राजेश आहूजा, नगर पालिका अध्यक्ष किशोर बरदे, उपाध्यक्ष जगदीश पवार, मंडल अध्यक्ष गोतू राजपूत, विधायक प्रतिनिधि सुधा चंद्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधि मंच पर उपस्थित रहे। मंडल अध्यक्ष गोतू राजपूत ने स्वागत भाषण देते हुए डॉ. पंडाग्रे को प्रदेश प्रवक्ता बनाए जाने पर बधाई दी। वहीं नगर पालिका अध्यक्ष किशोर बरदे ने उनके कार्यकाल की

सराहना करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में सारणी क्षेत्र और आमला विधानसभा में अनेक विकास कार्य हुए हैं, जिनमें 660 मेगावाट सारणी पावर प्लांट जैसी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ शामिल हैं। मंडल प्रभारी राजेश आहूजा ने अपने उद्घोषण में कहा कि डॉ. पंडाग्रे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं और आज वे भाजपा मध्यप्रदेश की सशक्त आवाज बनकर उभरे हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि भविष्य में उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर भी बड़ी जिम्मेदारी मिलेगी। अपने संबोधन में विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे ने कार्यकर्ताओं से पार्टी के प्रति ईमानदारी और समर्पण बनाए रखने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि समर्पित कार्यकर्ताओं को पार्टी में समय आने पर बड़ी जिम्मेदारियाँ अवश्य मिलती हैं। अंत में उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन महाधर्मजी विनय मदन ने किया। इस दौरान बड़ी संख्या में मंडल पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

## धर्म की स्थापना और अधर्म का विनाश ही जीवन का उद्देश्य: सुधांशु महाराज

केंद्रीय मंत्री डीडी उईके व विधायक डॉ. पंडाग्रे के साथ सुधांशु महाराज ने दीप प्रज्वलन कर किया चार दिवसीय भक्ति सत्संग महोत्सव का शुभारंभ

बैतूल। पुलिस ग्राउंड में चार दिवसीय विराट भक्ति सत्संग महोत्सव का भव्य शुभारंभ हुआ। विरघ्न जागृति मिशन के परमाध्यक्ष सुधांशुजी महाराज ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। प्रदेश सरकार द्वारा उन्हें राज्य अतिथि के रूप में सम्मानपूर्वक स्वागत दिया गया। आयोजन स्थल पर सुबह से ही भक्तिमय माहौल बना रहा और हजारों श्रद्धालु सत्संग में शामिल हुए। शुभारंभ अवसर पर केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्यमंत्री दुर्गादास उईके तथा आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे भी मौजूद रहे। दोनों जनप्रतिनिधियों ने सत्संग श्रवण करते हुए पूज्य महाराजजी का स्वागत और अभिनंदन किया। कार्यक्रम के मुख्य यजमान अशोक हिरानी द्वारा व्यास पूजन संपन्न हुआ, जबकि आयोजन समिति के प्रधान डॉ. विनय चौहान सहित अन्य पदाधिकारी और बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। अपने प्रवचन में सुधांशु महाराज ने कहा कि श्रीमद्भागवत गीता जीवन को दिशा देने वाली संजीवनी है। गीता जीवन को वापस बनाती है और आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्होंने धर्म की स्थापना और अधर्म के विनाश को



जीवन का मूल उद्देश्य बताते हुए सनातन पर गर्व करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि मृत्यु केवल एक अवस्था है, भय का विषय नहीं और मनुष्य को अपने जीवन में गीता के सिद्धांतों को अपनाना चाहिए। महाराजजी ने श्रद्धालुओं को भाव और भक्ति के माध्यम से परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग बताते कहा कि सच्चे मन से प्रेम और समर्पण ही ईश्वर तक पहुंचने का सबसे सरल माध्यम है। उन्होंने जीवन की



क्षणभंगुरता का उल्लेख करते हुए कि बिना आध्यात्मिक साधना के जीवन व्यर्थ हो जाता है। कार्यक्रम में मंच संचालन आचार्य अनिल झा ने किया। आयोजन समिति के डॉ. विनय चौहान ने बताया कि चार दिवसीय इस भक्ति सत्संग महोत्सव में प्रातः और सायंकालीन सत्र होंगे, जिनमें अधिक से अधिक संख्या में श्रद्धालुओं से परिवार सहित शामिल होने की अपील की गई है।

रिवार को होगा मंत्र दीक्षा संस्कार, पंजीयन अनिवार्य- डॉ. चौहान ने जानकारी दी कि रिवार को प्रातःकालीन सत्र के बाद दोपहर में मंत्र दीक्षा संस्कार आयोजित किया जाएगा, जिसके लिए पूर्व पंजीयन अनिवार्य रहेगा। यह आयोजन जिले में लंबे समय बाद आयोजित हो रहा है, जिससे श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखा जा रहा है।

हिंदू पक्ष की हाईकोर्ट में दलीलें, सभी पिलरों पर नक्काशी का जिक्र

# भोजशाला में मंदिर जैसी नक्काशी हमें मिले पूजा का अधिकार

भोपाल। धार भोजशाला को लेकर एमपी हाईकोर्ट में हर दिन सुनवाई चल रही है। हिंदू फॉर जस्टिस ने गुरुवार को भोजशाला-कमल मौला मामले में अपनी दलीलें पूरी कर ली हैं। इस दौरान हिंदू संगठन ने एएसआई की सर्वे रिपोर्ट पर जोर दिया है। साथ ही वकील विष्णु शंकर जैन ने दावा किया है कि मौजूदा ढांचा धार जिले की भोजशाला में तोड़े गए सरस्वती मंदिर से मिले मलबे का इस्तेमाल करके बनाया गया था। वहीं, हिंदू फंड फॉर जस्टिस के विष्णु शंकर जैन ने एएसआई सर्वे का हवाला दिया। उन्होंने जस्टिस विजय कुमार शुक्ला और आलोक अवस्थी के सामने दलील दी कि इस जगह पर 11वीं और 12वीं सदी के बीच परमार वंश द्वारा बनाया गया, एक हिंदू धार्मिक ढांचा मौजूद था। साथ ही उन्होंने दावा किया कि यह सरस्वती मंदिर और संस्कृत सीखने का केंद्र था। साथ ही एएसआई की रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि 14वीं सदी के बाद मुस्लिम हमलावरों ने इस हिंदू ढांचे को आंशिक रूप से नष्ट कर दिया था।

हिंदू धार्मिक ढांचा था मौजूद, मंदिर के रूप में थी पहचान- इसके साथ ही उन्होंने बताया कि 1903 और 1972-73 की पिछली एएसआई रिपोर्टों ने भी इस बात की पुष्टि की थी कि इस जगह पर एक हिंदू धार्मिक ढांचा मौजूद था, जिसमें एक



संस्कृत स्कूल चलता था। इसे हमलावरों ने नुकसान पहुंचाया था। साथ ही इमारत के अंदर मिले शिलालेख 'प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, 1904' की धारा 2 (2) के तहत पुरावशेष की श्रेणी में आता है। हिंदू संगठन ने अपनी दलील में यह भी कहा कि वायसराय लॉर्ड कर्जन ने भी 1904 में पेश की गई वार्षिक रिपोर्ट में जिक्र किया है कि इस जगह की पहचान एक मंदिर के रूप में थी। साथ ही इसकी

चारों दिशाओं में लंबी-लंबी कतारों में खंभे लगे हुए हैं। जिनमें 106 और 82 खंभों से सजाया गया है। उन्होंने कहा कि इन खंभों और छोटे खंभों पर बनी कला और वास्तुकला से पता चलता है कि ये मूल रूप से मंदिर का हिस्सा था।

नक्काशी में देवी-देवताओं की तस्वीरें- वहीं, इन नक्काशी में गणेश, ब्रह्मा, नरसिंह भैरव और विभिन्न देवी देवताओं, ईंसानों और जानवरों की आकृतियां शामिल

हैं। इनमें शेर, हाथी, घोड़े, कुत्ते, बंदर, सांप, कछुए, हंस और पक्षी प्रमुख हैं। इसके साथ ही विष्णु शंकर जैन ने तर्क दिया कि इस्लामी परंपरा मुस्लिमों के भीतर मानव और पशु आकृतियों के चित्रण पर रोक लगाती है। इसलिए ऐसी छवियों को कई जगहों पर छेनी से काटकर हटा दिया गया था। यह विरूपित कर दिया गया था। साथ ही हिंदू संगठन ने यहां पर पूरे साल पूजा की इजाजत मांगी है।

मोहन सरकार और केंद्र पर तीखा हमला

## 'किसानों के साथ हुआ विश्वासघात, मध्य प्रदेश में 'किसान कल्याण' नहीं 'किसान शोषण' वर्ष मना रही भाजपा : जीतू पटवारी

भोपाल। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री जितेंद्र (जीतू) पटवारी ने आज भोपाल में पत्रकारों से चर्चा करते हुए प्रदेश की भाजपा सरकार और केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान पर कड़ा प्रहार किया। पटवारी ने कहा कि जो शिवराज सिंह चौहान खुद को 'पांव-पांव वाले भैया' और 'किसान पुत्र' कहते थे, वे आज 'हवाई जहाज वाले भैया' बन गए हैं और सत्ता के अहंकार में किसानों की बढहली का मजाक उड़ा रहे हैं।

श्री जितेंद्र (जीतू) पटवारी ने कहा कि भाजपा ने चुनाव के समय किसानों को मोदी की गांठी दी थी-सोयाबीन का दाम रू. 6000, गेहूं रू. 2700 और धान रू. 3100 प्रति क्विंटल देने का वादा किया था। लेकिन हकीकत में किसानों को अपनी फसल औने-पौने दामों पर बेचनी पड़ रही है। उन्होंने कहा कि 'मुझे खुशी नहीं होती कि मैं 50 किलो अनाज की बोरी कंधे पर रखकर शिवराज जी के घर जाऊं, लेकिन एक जिम्मेदार विपक्ष के नाते मेरा कर्तव्य है कि मैं उन्हें उनके झूठे वादे याद दिलाऊं।'

संसद में कृषि मंत्री द्वारा किसानों की आय 8 गुना बढ़ने के दावे पर पटवारी ने कहा कि वे स्वयं सागर और विदिशा की मंडियों में किसानों से मिलकर आए हैं। वहाँ 70% किसान, जिन्होंने भाजपा को वोट दिया था, वे भी कह रहे हैं कि सरकार झूठ बोल रही है। आज मध्य प्रदेश का 80% किसान बैंकों का डिफॉल्टर हो चुका है, जिसके लिए सीधे तौर पर भाजपा की नीतियां जिम्मेदार हैं।



पटवारी ने आरोप लगाया कि गेहूं उपार्जन में जानबूझकर देरी की गई ताकि किसानों को मजबूरी में व्यापारियों को फसल बेचनी पड़े। उन्होंने कहा, लगभग '15 लाख क्विंटल गेहूं उपार्जन से पहले ही बिक गया किसानों को घाटा देकर भाजपा से जुड़े व्यापारियों की जेबें भरी गईं। यह

किसानों के साथ किया गया एक बड़ा आर्थिक अपराध है।'

पटवारी ने मुख्यमंत्री मोहन यादव को घेरते हुए कहा कि मध्य प्रदेश में भ्रष्टाचार 'कैसर' की तरह फैल चुका है। पंचायत से लेकर मंत्रालय की पांचवीं मंजिल तक माफियाओं का कब्जा है। उन्होंने कहा कि हालिया ट्रांसफर लिस्ट केवल 'लेन-देन' और भ्रष्टाचार का नतीजा है, जिसका जनता की सेवा से कोई लेना-देना नहीं है।

पटवारी ने मुख्यमंत्री मोहन यादव से आग्रह किया कि वे तबादला उद्योग चलाने के बजाय विशेषज्ञों के साथ बैठकर प्रदेश की समस्याओं के समाधान के लिए गंभीर बैठकें करें। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने सकारात्मक प्रयास नहीं किए, तो आगामी चुनावों में किसान और जनता भाजपा को करारा जवाब देगी।

श्री पटवारी ने अंत में कहा कि रायसेन में होने वाला 'कृषि मेला' किसानों के धावों पर नमक छिड़कने जैसा है। भाजपा ने किसानों को खाद के लिए लाइन में खड़ा किया, बारदाने का संकट पैदा किया और अब उनकी अस्मिता से खेल रही है।

## अब गर्भावस्था में महिला की मौत का कारण आएगा सामने

डेढ़ घंटे में आएगी रिपोर्ट, नहीं रहेगा पुलिस का इंटॉल्वमेंट; एम्स में फ्री क्लिनिकल ऑटोप्सी शुरू



भोपाल। एमपी मातृ और शिशु स्वास्थ्य के मामले में देश के सबसे पीछे रहने वाला राज्य है। ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, प्रदेश में हर एक लाख प्रसव में 159 माताएं और हर एक हजार जन्म में 40 नवजात अपनी जान गंवा रहे हैं। ये आंकड़े सिर्फ एक नंबर नहीं, बल्कि उन परिवारों की पीड़ा हैं जो समय पर इलाज, संसाधन और सुरक्षित प्रसव सुविधाओं के अभाव में अपनी को खो देते हैं। यही नहीं कई बार मौत की असली वजह सामने नहीं आ पाती, जिससे सुधार के ठोस कदम भी नहीं उठ पाते। अब इसी चुनौती से निपटने के लिए एम्स भोपाल ने एक अहम पहल शुरू की है। यहां गर्भावस्था या प्रसव के दौरान हुई महिलाओं की मौत के मामले में क्लिनिकल ऑटोप्सी की सुविधा दी जा रही है, जिससे मौत की असली वजह सामने लाई जा सके। खास बात यह है कि यह प्रक्रिया पूरी तरह फ्री है और इसमें पुलिस की कोई भूमिका नहीं होती। परिवार की सहमति से होने वाली इस जांच से न केवल परिजनों को सच्चाई पता चलती है, बल्कि सरकार को भी ऐसा डेटा मिलता है, जिससे भविष्य में मातृ मृत्यु को कम करने की रणनीति तैयार की जा सके। डॉक्टरों के अनुसार, मध्यप्रदेश उन राज्यों में शामिल है जहां मातृ मृत्यु के मामले अपेक्षाकृत अधिक हैं। मातृ मृत्यु का मतलब है कि गर्भावस्था के दौरान, प्रसव के समय या गर्भसमापन के 42 दिनों के भीतर महिला की मौत। ऐसे मामलों को रोकना सरकार की बड़ी जिम्मेदारी होती है।

अब मौत के कारणों की होगी सटीक पहचान- इन मामलों में मौत की असली वजह साफ नहीं हो पाती। ऐसे में एम्स भोपाल में क्लिनिकल ऑटोप्सी के जरिए वैज्ञानिक तरीके से कारणों की जांच की जा रही है। इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि कौन सी मौत रोकी जा सकती थी और किन मामलों में स्थिति गंभीर थी। यह प्रक्रिया मेडिको-लीगल ऑटोप्सी से अलग होती है। इसमें पुलिस की जरूरत नहीं होती और यह परिवार के अनुरोध पर की जाती है। इसमें शरीर के जरूरी हिस्सों की जांच कर बीमारी या जटिलता की सही वजह पता की जाती है। ऑटोप्सी के बाद डॉक्टर हिस्टोपैथोलॉजी और माइक्रोबायोलॉजी रिपोर्ट तैयार करते हैं। कुछ ही दिनों में यह रिपोर्ट परिवार को दी जाती है। इससे परिजनों को यह समझने में मदद मिलती है कि मौत क्यों हुई और कोई लापरवाही तो नहीं हुई। इस पहल से सरकार को मातृ मृत्यु के मामलों का सटीक और प्रमाणिक डेटा मिलेगा। इसके आधार पर स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, सुविधाओं की कमी और इलाज की खामियों को पहचान कर बेहतर रणनीति बनाई जा सकेगी।

## एमपी सरकार ने महिला उद्यमिता को दिया बड़ा बढ़ावा

एमएसएमई विकास नीति-2025 ने महिलाओं को बनाया आत्मनिर्भर

एमपी की स्टार्ट-अप नीति ने महिला उद्यमियों के सपनों को दी बड़ी उड़ान

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के महिला सशक्तिकरण, उद्यमिता और 'वोकल फॉर लोकल' के संकल्प को मध्यप्रदेश सरकार ने साकार किया है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की अगुवाई में एमएसएमई विकास नीति : 2025 और स्टार्ट-अप नीति : 2025 ने महिलाओं को उद्यमी बनाने में अहम भूमिका निभाई है। मध्यप्रदेश की नीतियों में महिलाओं को पर्याप्त प्रतिनिधित्व और योजनाओं के कारण ही 24 लाख 34 हजार सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम में से 4.11 लाख यानि 17 फीसदी इकाइयां महिलाओं द्वारा संचालित हैं। गत वर्ष ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा



लोकार्पित स्टार्ट-अप नीति में 7264 में से 3476 यानि 48 स्टार्ट-अप महिलाओं के हैं। मध्यप्रदेश की यह तस्वीर राज्य सरकार की देश में सशक्त उपस्थिति दर्ज कराता है। इससे स्पष्ट है कि महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भर भारत का सपना मध्यप्रदेश में साकार हो रहा है।

मध्यप्रदेश की एमएसएमई विकास नीति में बड़े प्रावधान- महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। अब उन महिला उद्यमियों को जो संयंत्र रू. 10 करोड़ तक के निवेश पर अधिकतम 48 प्रतिशत तक की पूंजी अनुदान दिए जाने का प्रावधान किया गया

है। अनुसूचित जाति और जनजाति की महिलाओं के लिए यह दर अधिकतम 50 प्रतिशत निर्धारित की गई है, जबकि सामान्य वर्ग के लिए 40 प्रतिशत है। इस नीति से मार्च 2026 तक 24.34 लाख से अधिक एमएसएमई इकाइयों में से करीब 4.11 लाख महिलाओं द्वारा स्थापित की गई हैं। 2025 में महिलाओं द्वारा स्थापित स्टार्ट-अप को 18वें वित्तीय सहायता का प्रावधान किया गया है। प्रति ट्रांच 18 लाख रुपये तक की मदद मिल सकती है और कुल सहायता 72 लाख रुपये तक हो सकती है। अन्य स्टार्ट-अप के लिए यह सीमा 15 प्रतिशत या 15 लाख रुपये है। अब तक 7264 मातृता प्राप्त स्टार्ट-अप में से 3476 मतलब 48 फीसदी महिला उद्यमियों द्वारा चलाए जा रहे हैं। मध्यप्रदेश शासन के इन कदमों से महिला सशक्तिकरण में नई ऊंचाइयां हासिल हो रही हैं।

## केन बेतवा लिंक परियोजना के विरोध में 'चिता आंदोलन'

क्षेत्र की महिलाओं ने कहा-हमें यही जला दो या नया गांव दो

भोपाल। मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में आदिवासी किसान और महिलाएं केन बेतवा लिंक परियोजना का विरोध कर रहे हैं। गुरुवार को सैकड़ों लोग नकली चिताओं पर लोट गए। इनमें ज्यादातर महिलाएं थीं। इस प्रदर्शन के जरिए महिलाओं ने यह संकेत दिया है कि वे आखिरी सांस तक इस परियोजना का विरोध करते रहेंगे। प्रदर्शन कर रहे लोगों का गांव डूब क्षेत्र में आ रहा है। ऐसे में इनकी मांग है कि हमें अत्याधिक मूआवजा और नया गांव दें। दरअसल, छतरपुर जिले में केन बेतवा नदी लिंक परियोजना को लेकर विरोध लंबे समय से चल रहा है। प्रभावित लोग अलग-अलग तरीके से इसका विरोध जता रहे हैं। गुरुवार को महिलाएं परियोजना के विरोध में नकली चिताओं पर लोट गईं। महिलाएं इसे चिता आंदोलन कह रही हैं। साथ वे मांग कर रही हैं कि हमें या तो न्याय दो या मृत्यु दो। वहीं, पुलिस ने जब इन्हें हटाने की कोशिश की तो इनके साथ हल्की झड़प हो गई। प्रदर्शन कर रहे लोगों का कहना है कि प्रशासन हमें परेशान कर रहा है। मगर हमलोगों ने कसम खाई है कि जब तक हमारी



मांगें पूरी नहीं होती है, हम यहां डटे रहेंगे और अपनी लड़ाई जारी रखेंगे।

पानी की कमी वाले इलाकों में पानी

## समर्थन मूल्य पर 5220 किसानों से हुई 17,965 विक्टल गेहूँ की खरीदी : खाद्य मंत्री राजपूत

भोपाल। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अभी तक 5220 किसानों से 12 हजार 521 क्विंटल गेहूँ की खरीदी की जा चुकी है। गेहूँ का उपार्जन इंदौर, उज्जैन, भोपाल और नर्मदापुरम संभाग में 9 अप्रैल से शुरू हो चुका है। उन्होंने बताया कि शेष संभागों में 15 अप्रैल से गेहूँ का उपार्जन शुरू किया जायेगा। अभी तक एक लाख 48 हजार 247 किसानों द्वारा 6 लाख 74 हजार 290 मीट्रिक टन गेहूँ के विक्रय के लिये स्लॉट बुक किये जा चुके हैं। गेहूँ खरीदी के लिये 3171 उपार्जन केन्द्र बनाये गये हैं। खाद्य

मंत्री राजपूत ने बताया है कि रबी विपणन वर्ष 2026-27 में समर्थन मूल्य पर गेहूँ उपार्जन के लिये अभी तक 97 हजार 474 किसानों द्वारा 4 लाख 46 हजार 582 मीट्रिक टन गेहूँ के विक्रय के लिये स्लॉट बुक किये जा चुके हैं। किसानों से 2585 रुपये प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य एवं राज्य सरकार द्वारा घोषित 40 रुपये प्रति क्विंटल बोनस राशि सहित 2625 रुपये प्रति क्विंटल की दर से गेहूँ का उपार्जन किया जा रहा है। गेहूँ के उपार्जन के लिये आवश्यक बारदानों की व्यवस्था की जा चुकी है। उपार्जित गेहूँ को रखने के लिये जूट बारदानों के साथ ही पीपी/एचडीपी बैग एवं जूट के भर्ती

बारदाने का उपयोग किया जा रहा है। समर्थन मूल्य पर उपार्जित गेहूँ के सुरक्षित भंडारण की पर्याप्त व्यवस्था की गई है। उपार्जित गेहूँ में से मुख्य रूप से जिला उज्जैन में 3029, शाजापुर में 2785, देवास में 1747, सीहोर में 1732, इंदौर में 1364, राजगढ़ में 1210, भोपाल में 907, विदिशा में 822, रतलाम में 697, आगर-मालवा में 683, धार में 581, खंडवा में 522, मंदसौर में 498, नर्मदापुरम में 378, खरगोन में 359, नीमच में 281, हरदा में 180, झाबुआ में 91, बैतूल में 46, बड़वानी में 28 और रायसेन में 24 मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन किया गया है।

## त्यापमं के बर्खास्त छात्रों को 16-16 लाख में बनाया डॉक्टर!

बिना परीक्षा एमबीबीएस की डिग्रियां देने का आरोप, सामने आया बाबू का ऑडियो



ग्वालियर। बिना परीक्षा दिए एमबीबीएस की डिग्री...! वो भी व्यापाम फर्जीवाड़े में बर्खास्त किए गए छात्रों को। ये आरोप लगे हैं ग्वालियर के जीवाजी विश्वविद्यालय से संबंधित गजरागाजा मेडिकल कॉलेज में। मामले में शाखा प्रभारी प्रशांत चतुर्वेदी का एक ऑडियो भी सामने आया है। ऑडियो में वे जांच कमेटी द्वारा बर्खास्त किए गए छात्रों को सफाई देते नजर आ रहे हैं। बातचीत में 16-16 लाख रुपए में डिग्री देने के आरोप भी लगाए गए हैं। छात्र शाखा (यूजी) प्रभारी प्रशांत चतुर्वेदी और उनके सहायक पंकज कुशवाह पर आरोप है कि व्यापाम कांड में बर्खास्त छात्रों को बिना बहाली, बिना अटेंडेंस और बिना परीक्षा दिए एमबीबीएस की डिग्री दे दी गई।

पूर्व छात्र संदीप लहरिया ने इसकी लिखित शिकायत राज्यपाल और मेडिकल कॉलेज के डीन से की है। जीवाजी यूनिवर्सिटी के अधिकारियों और गोपनीय शाखा के कर्मचारियों पर मिलीभगत का भी आरोप लगाया है। लहरिया ने बताया कि व्यापाम मामले में करीब 150 छात्रों पर एफआईआर दर्ज की गई थी। इनमें से 30 से अधिक एमबीबीएस छात्रों को बर्खास्त किया गया था, जिनमें संदीप लहरिया खुद भी शामिल हैं। उनका दावा है कि बर्खास्त छात्रों में से किसी को भी अब तक बहाल नहीं किया गया है और न ही किसी नई कमेटी ने राहत दी है। इसके बावजूद कई छात्रों को एमबीबीएस की डिग्री जारी कर दी गई, जो धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार की श्रेणी में आता है।

ऑडियो में 16 लाख में डिग्री देने का आरोप

शिकायतकर्ता के अनुसार प्रशांत चतुर्वेदी का एक ऑडियो सामने आया है, जिसमें बर्खास्त छात्र के मामले में सफाई दी जा रही है। बातचीत में पूर्व छात्र द्वारा 16-16 लाख रुपए में डिग्री देने का आरोप लगाया गया है। शिकायतकर्ता का दावा है कि उसके पास कई ऑडियो और वीडियो हैं, जिनसे पूरे फर्जीवाड़े का खुलासा किया जा सकता है। पूर्व छात्र प्रशांत चतुर्वेदी के अलावा मेडिकल कॉलेज के डीन समेत कई अधिकारियों व जीवाजी यूनिवर्सिटी के गोपनीय शाखा के अधिकारी व कर्मचारी शामिल हैं।

जांच सौंप दी, लेकिन शिकायत का पता ही नहीं

इस मामले में ग्वालियर मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. आरकेएस थाकड़ से जब बात करना चाहते तो उन्होंने भी बाइट देने से मना कर दिया और इस शिकायत व गड़बड़झाला के बारे में पूछा तो उनका कहना था कि कई शिकायतें आती हैं। यह शिकायत आई होगी, लेकिन उनकी जानकारी में नहीं है। जबकि वह इस शिकायत की जांच डॉ. प्रमोद कुमार खबानिया को सौंप चुके हैं।

यूजी शाखा प्रभारी पर डिग्री जारी कराने का आरोप

शिकायत में संदीप लहरिया ने आरोप लगाया है कि बर्खास्त छात्रों को गलत तरीके से एमबीबीएस डिग्री जारी की गई। न तो उन्हें बहाल किया गया और न ही उन्होंने निर्धारित मानक पूरे किए। उनका कहना है कि इस पूरे मामले में छात्र शाखा (यूजी) प्रभारी प्रशांत चतुर्वेदी और उनके सहायक पंकज कुशवाह की भूमिका है। साथ ही मेडिकल कॉलेज प्रशासन और जीवाजी यूनिवर्सिटी के संबंधित अधिकारियों की मिलीभगत से फर्जी डिग्रियां जारी होने का आरोप लगाया गया है।